



'रिदेह' ०९ जून २००८ ( वर्ष ९ मास ७ अंक ९९ ) एहि अंकमे अङ्कित:-



महत्त्वपूर्ण सूचना: २० म शताब्दीक सरश्रेष्ठा मिथिला बने श्री वामाश्रय मा 'वामवर्ग' जिनका लोक 'अभिनव भातखण्ड' केव नामसँ सेहो सोव करैत छन्हि, 'रिदेह' केव हेतु अपन संदेशे पठौने छथि आर ताहि आधाव पव हुनकर जीवन आर प्रतिक विषयमे रिसुत निरर्थक रिदेहक संगीत शिक्षा सुंभमे अ-प्रकाशित कवरौक हमबा लोकनिकेँ सौभाग्य भेटैत अछि ।



१. नो अर्द्धी: मा प्ररिषि श्री उदय नावायण सिंह 'नचिकेता'

मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककार श्री नचिकेताजीक ठैठका नाटक, जे रिगत २३. रररक म्मोन्तंगक पश्चात् पाठकक समूथ प्रसुत भ बहन अछि । सरप्रथम रिदेहमे एकबा धावारालिक कर्पे अ-प्रकाशित कएन जा बहन अछि । पढू नाटकक दोसब कल्लानक दोसब थैप ।

२. शोध लेख: मायानन्द मिश्रक अतिहास र्ोध (आगाँ)

३. उपन्यास सहस्ररौढनि (आगाँ)

४. महाकारा महाभावत (आगाँ) अ. कथा (संगीत)

५. पद्य अ. रिसुत करि न्न. वामजी चौधरी.



आ. श्री गणेशी र्जन.



अ. ज्योति मा चौधरी आर अ. गजेन्द्र ठाकुर

१. संस्कृत शिक्षा (आगाँ)



८. मिथिला कना (आगाँ)



९. पारनि-संकाव-तीर्थ- नूतन मा

१०. संगीत शिक्षा -श्री वामाश्रय मा 'वामवर्ग' ९९. रानाना प्रते- गोनू मा आर दस ठोप रौरा



१२. पञ्जी प्रबंध (आगाँ)

पञ्जी-संग्राहक श्री रिद्यानंद झा पञ्जीकाव (प्रसिद्ध मोहनजी )

१३. संस्कृत मैथिली मिथिला

१४. मैथिली भाषापक

१५. बचना लेखन (आगाँ)

## 16. VI DEHA FOR NON RESIDENT MAI TH I L S -Vi deha M t h i l a T i r b h u k t i T i r h u t ...

**महत्त्वपूर्ण सूचना:(१)** रिस्यूत करि स्र. वामजी चौधरी (1878-1952)पब शोध-लेख रिदेहक पहिन अकमे अ-प्रकाशित लेन छन। तकर रौद हनकब पत्र श्री दुर्गानन्द चौधरी, ग्राम-कद्रपुव,थाना-अधवा-ठाह १, जिना-मधुवनी करिजीक अ-प्रकाशित पान्दुनिपि रिदेह कार्यालयकेँ डाकसँ रिदेहमे प्रकाशिनार्थ पठौनहि अछि। अ गौठ-पचासक पद्य रिदेहमे नरम अकसँ धावाराहिक कपेँ अ-प्रकाशित भ' बहन अछि।

**महत्त्वपूर्ण सूचना:(२)** 'रिदेह' द्वारा कएन गेन शोधक आधाव पब मैथिली-अंग्रेजी आ२ अंग्रेजी-मैथिली शिद्ध कोशि (संपादक गजेन्द्र ठाकुर आ२ नागेन्द्र कृमाव ना) प्रकाशित कबरौउन जा' बहन अछि। प्रकाशिकक, प्रकाशिन तिथिक, पुस्तक-आप्तिक रिधिक आ२ पौथीक मूनाक सूचना एहि पृष्ठा पब शीघ्र देन जायत।

**महत्त्वपूर्ण सूचना:(३)** 'रिदेह' द्वारा धावाराहिक कपेँ अ-प्रकाशित कएन जा' बहन गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्ररौहनि'(उपन्यास), 'गल्प-गुच्छ'(कथा संग्रह), 'भानसवि' (पद्य संग्रह), 'रौनाना प्रते', 'एकाक्षी संग्रह', 'महाभावत' 'ब्रह्म चवित' (महाकारा)आ२ 'यात्रा वृत्तांत' रिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशिनक रौद प्रिंठ फार्ममे प्रकाशित होएत। प्रकाशिकक, प्रकाशिन तिथिक, पुस्तक-आप्तिक रिधिक आ२ पौथीक मूनाक सूचना एहि पृष्ठा पब शीघ्र देन जायत।

**महत्त्वपूर्ण सूचना (४):** श्री आद्याचरण ना, श्री अशुक्ल कृमाव सिंह 'मौन' श्री कैनाशि कृमाव मिश्री (गर्दिवा गांधी वास्द्वीय कना केन्द्र), श्री श्याम ना आ२ डाँ. श्री शिर प्रसाद यादर जीक सम्यति आयन अछि आ२ हिनकब सभक बचना अगिना १-२ अकक रौदसँ 'रिदेह' मे अ-प्रकाशित होमय नागत।

**महत्त्वपूर्ण सूचना (५):** महत्त्वपूर्ण सूचना: अगिना अकमे मैथिली लेकु पद्य देन जायत।

रिदेह (दिनांक ०१ जून, २००८)

संपादकीय

वर्ष: १

मास: ७

अंक:११

माण्डव,



<http://www.videha.co.in/> मानुषीमिह संस्कृतम्

रिदेहक नर अंक (अंक ११ दिनांक ०१ जून २००८) अ परिनिश भ बहन अछि । एहि हेतु नांग आन कक <http://www.videha.co.in/> |

नचिकेतोजीक नाठक नो अर्धी: मा अरिनिश दोसब कलानक दोसब खेप अ-अकाशित भ बहन अछि । गगेशि गुंजन जीक करिता आर रिस्मृत करि वामजी चौधरीक अअकाशित पद्य सेहो अ-अकाशित भए बहन अछि ।

एहिमे कोनो संदेह नहि जे २०म शताब्दीमे जतेक मिथिला रिभूति लेनाह ओहिमे श्री वामश्रिय ना 'वामवंग' सरोपबि छथि । रिदेह हेतु हुनकब अस्थाओन संदेशिक आधाव पब हुनक जीरनी आर अतिरुके रिदेहक संगीत शिक्षा सुंभमे पाठकक समझ खनरामे हमबा सभ गर् अन्नभर कए बहन छी ।

शेष स्वायी सुंभ यथारत अछि ।

अपनेक बचना आ अतिरुधियाक अतीकामे । रविअ बचनाकाव अपन बचना हसुनिथित कपमे सेहो नीचा निखन पता पब पठा सकैत छथि ।

गजेन्द्र ठाकुर

389, पाँकेठ-सी, सेकठ-ए, रसभुज, नर देहनी-११००१०.

फैल्ला: ०११-४१११११२३.

०१ जून २००८ नर देहनी

<http://www.videha.co.in/>

[ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in)

[ggajendra@yahoo.co.in](mailto:ggajendra@yahoo.co.in)

(c)२००८. सराधिकार लेखकाधीन आ जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन ।

रिदेह (पाक्षिक) संपादक- गजेन्द्र ठाकुर । एतय अकाशित बचना सभक काँपीवागठ लेखक लोकनिक नगमे बहतछि, मात्र एकब अथम अकाशिक/आकाशिक/अग्रोजी-संस्कृत अन्नरादक अधिकार एहि अ परित्रिके छैक । बचनाकाव अपन योनिक आ अअकाशित बचना (जकब योनिकताक संपूर्ण उंठवदायिन्न लेखक गणक मध्य छथि) [ggajendra@yahoo.co.in](mailto:ggajendra@yahoo.co.in) आकि [ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) केँ मेन अठैचमेठक कपमे .doc, .docx आ .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अपन संस्क्रिप्ट परिचय आ अपन स्क्रिन कएन गेन होठे पठैताह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमे



ठांगप बहय, जे ङा बचना मौनिक अछि, आ पलिन प्रकाशिनक हेतु रिदेह (पाक्षिक) ङा पत्रिकारुँ देन जा बहन अछि । मेन प्राप्त होयराक बाद यथामंभर शीघ्र ( सात दिनक भीतब) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देन जायत । एहि ङा पत्रिकारुँ श्रीमति नम्मा ठाकुर द्वारा मासक 1 आ 15 तिथिरुँ ङा प्रकाशित कएन जागत अछि ।



१. नाटक

श्री उदय नावायण सिंह 'नचिकेता' जन्म-१९३९ ङा कनकपुरामे । १९७७ मे १३. ररुषक उअमे पलिन कारा संग्रह 'करयो रदन्ति' / १९९९ 'अमृतम्य पत्राः' (करिता संकनन) आ 'नायकक नाम जीरन'(नाटक) / १९९४ मे 'एक छन बाजा' / नाटकक लेन(नाटक) । १९९७-९९ 'प्रवारुन' / 'बामनीना'(नाटक) । १९९९मे जनक आ अन्त एककी । १९९९ 'अनुभव'(करिता-संकनन) । १९९९ 'प्रियरदा' (नाटक) । १९९९-'बरीन्द्रनाथक रान-साहित'(अनुवाद) । १९९९ 'अनुप्राति'- आधुनिक मैथिली करिताक रंगनामे अनुवाद, संगहि रंगनामे दूरी करिता संकनन । १९९९ 'अनु उ पवितास' । २००२ 'आम थेयानी' । २००७मे 'मध्यमपुत्र एककरण'(करिता संग्रह) । भाषा-रिज्ञानक क्षेत्रमे दसरी पोथी आ दू समयसँ रेशी शोध-पत्र प्रकाशित । १४ टी पी.एच.डी. आ २९ टी एम.फिन. शोध-कर्मक दिशो निर्देश । रूढ़ीदा, सूबत, दिल्ली आ हैदराबाद रि.रि.मे अध्यापन । संप्रति निर्देशक, केन्द्रीय भावतीय भाषा संस्थान, मैसूर ।

नो अंती : मा प्ररिणे

(चावि-अकीय मैथिली नाटक)

नाटककार उदय नावायण सिंह 'नचिकेता' निर्देशक, केन्द्रीय भावतीय भाषा संस्थान, मैसूर

(मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककार श्री नचिकेतजीक ठठका नाटक, जे रिगत २३. ररुषक मौन लंगक पश्चात् पाठकक समुथ प्रस्तुत भ बहन अछि ।)

दोसब कल्लानक दोसब भाग जाबी....रिदेहक एहि एगावहम अंक ०९ जून २००९ सँ ।

नो अंती : मा प्ररिणे



### दोसब कल्लान दोसब खेप

नेताजी : (खन्नचव 1 सँ चोब केँ देखा कए) अ के थिकाह ?

(दूनु खन्नचव की कहताह से रूमि नहि परैत छथि । )

चोब : (खपनहि खगुखा कए खपन पविचय दैत) जी, हम एकठा सामान्य कनाकाब छी... ?

नेताजी : (उठि कए खपन रात कहैत चोब केँ खानिगन करैत) खरे...खरे...  
खहोभागा हमब... !

चोब : (खपनकेँ छोड़-रैत) नधि, नधि खहाँ जे रूमि बहन छी से नधि...

नेताजी : माने ?

चोब : हमब कनाकाबी त' रँडः साधावण मानक थीक ।

राजारी : ओ नेताजी... खदूँ कौन भ्रम मे पडः गेनहूँ 'चोब' थिकाह अ...  
'चोब' ! ...(चोब माथ मूका नैत अछि) ।

नेताजी : (चौकैत दूदा खपन रिसुय पब प्रयास क' कए कारूँ पारि) खँय...ताहिसँ  
की, अ त' हमरे गाम-घबक पाहन छथि... (कनेक 'दूस्की' दैत) का जनमे सँ  
त' 'चोब' नहि होगत अछि...हमब समाजक स्थितिये ककरो चोब त' ककरो  
'पाँकिठ-माव' आ ककबह-ककबह 'उचक्का' रँना दैत अछि ।

(जखन ओ 'पाँकिठ-माव' आ 'उचक्का' दय रँजैत  
छथि तखन एक-एक क' कए पाँकिठ-माव एरँ उचक्का उठि कए ठाठः भ  
जागत अछि)

पाँकिठ-माव : हजुब ! हम छी पाँकिठ-माव !



उचक्का : हम एकठाँ उचक्का छी... नहंगा कही त' सेहो चनि सकैछ... गनी-मोहल्लाक 'दादा' छी !

नेताजी : (जेना संतुष्ट भेन होथि) राह ,राह.... एत' त' देखि बहन छी सरँ तबहक नोक उँपस्थित भेन छथि । हमब माथा ह्लोडँत कान रिवोधी पम्फक नेता ठीके कहने छनाह जे स्रञ्ज आ नर्कक रीचमे हमबा खपन संसावक एकठाँ छोट- छीन सजिन्द संस्करण भेटि जायत....हमबा उँकडू नषि नागत दुनियाँ छोटि कए जायमे... ! (थम्हैत) एत' त' देखि बहन छी का रोजावक मोबा नेने छथि त' का प्रेमक जरीत पोथा नेने आ का - का बणभूमिसँ सोमे रँन्दूक नेने उँपस्थित भेन छथि, रँस जे किछ कमि अछि से....

[हिनका रोजेत-रोजैत एकठाँ हरक प्ररेशे करैत अछि, हाथमे एकठाँ ननका मंडा नेने-रामपंथी रीतचीत हार भार तेहने]

रामपंथी : जे किछ कमि अछि से हम पूवा क' दैत छी ।

(सभ का चोकि कए हनका दिसि देखैत छथि)

उचक्का : (जेना चिन्हन नोक होथि) रौ जीतो छीकेँ रौ ? जितेन्दब ?

रामपंथी : (उँग्र स्रवमे) जीतो ? के जीतो ? कतहका जीतो ? हम त' सरँ दिन हाबने नोकक दिसि नूकन छी ।

नेता : हँ, हँ से सरँ त' ठीके छैक-त' अहाँ एत' आँडे ने मँच पब ....(रामपंथी हरक प्रसन्न भ' कए मँच पब चटँत छथि-दूनु अन्नचबसँ आप्यायित भ' कए आव अधिक प्रसन्न होगत छथि ।) एत' सभ्त अहाँ मन् महान हरा नेता केब अँभार खँकि बहन छन अहाँ भने हाबन नोकक नेता होग, अहाँ नोकनिक मंडाक बंग जे हो - नान कि हबियब, हमबा सभक पीठ्ीक सरँठा आशा, अही सरँ छी...

रामपंथी : से सरँ त' ठीक अछि, झुदा (चोब केँ देखा क') ज़ा के थिकाह ?

नेता : ज़ा एकठाँ पेघ कनाकाब थिकाह ।

चोब : (ठेँकैत) हम चोब थिकहूँ सबकाब ।

रामपंथी : आँय ?



- पाँकिठ-माव : (बीडमे ठाठ होगत) हम पाँकिठ-माव !
- उचक्का : (ओहो नगनहि उठि कए ठाठ होगत छथि) आ हम उचक्का !
- भिख-मंगनी : (उठि कय) हम भिख-मंगनी !
- बमणी मोहन : हम रँनाकोवक सजा भोगि बहन छी—जनताक हाथे पीठा क' एत' आसन छी ।
- रामपंथी : (आफाशे करैत) छी, छी, छी ! एहन सभ नोक छैक एतय... (नेताकेँ पुछैत) आ' अहाँ चोब-चोष्टा नोकनिक नेता थिकहुँ ? अफसोस अग....
- नेता : आ- हा-हा ! एतेक अफसोस किएक क' बहन छी ? जखन दुनियाँ मे हब तबहक नोक होगत छैक, तखन अ स्नाभारिक छैक जे एतहुँ एकब पुनवारुति हेत । आ असा मसीह की कहैत छथि ?
- अनुचव 1 : चोबीक निन्दा कक !
- अनुचव 2 : चोबक नहि !
- चोब : अ राँत असा मसीह नहि कहने छथि.....
- अनुचव 1 : तखन ?
- अनुचव 2 : की कहने छनाह ?
- चोब : पापक बाग कक, पापीक नहि..... !
- रामपंथी : जाय दिख धार्मिक गप-शेप.... ! (चोब सँ) त' अहाँ की कह' चाहे छी ? चोबी पाप नहि थिक ?
- चोब : (रिहँसत) 'पाप' आ पुण्याक चिन्ता रामपंथीक सीमासँ बाहबक गप्प भेन । हम कहै छुनहुँ दुनियाँक सरँठा जीरैत करि-कथाकाब मूगन करि-कथाकाबक कंधे पब अपन गमावत ठाठ करैत छथि....के कहन कनाकाबीसँ अनकब राँत केँ परोसत तकरे खेन छुग सरँठा..... !
- अनुचव 1 : अ कहै छथि पीठा-दब-पीठा सरँ का' अनकहि राँत आ थिम्सा पब गठैत अछि अपन कहानी.....
- अनुचव 2 : कहि छथि—किछ नहि नर अछि एहि दुनियाँमे.... सरँठा पुवाने राँत !
- नेता : अर्थि चोबायरँ एकठा शीघ्रत प्रवृति थिक ।
- रामपंथी : नाँन-सेग !



नेता : कियेक ? पृथ्वीराज संघजा केँ न' कए चम्पत नहि भेन छनाह ? आ खर्जून चित्रांगदाकेँ ? (हरा केँ माथ डोनरैत देखि) आ किसुन भुगवानकेँ की कहरनि ? कतह 'माथन' चोवारैत छथि त' कतह 'कपड़' । नत्रा'...

रामपंथी : (खौमेत) गयेह भेन खहाँ सरँ सन नेताक समझा... खहिना मावन गेन हिन्दुस्तान ! मौका भेटैतहि ब्रह्मा- रिष्-महेशे केँ न' आरै छी उतावि क' ताखा पब सँ...

रौजारी : (मजाक करैत) हे... आरँ आरि गेन छी हमही सरँ ताखा पब सँ उतावि स्रक्क द्वाव मे...चनरँ ओहि पाव तँ अ सरँ भेटै छैरै कवताह ।

नेता : मानू, आ कि नहि मानू... छी त' जाहि देशेक लोग तकव नामो मे त' गतिहासे-प्रवाण नेपन अछि कि नथि ? 'भावत' कही त' 'भवत' क कथा मोन पड़त आ 'हिन्दुस्तान' कही त' 'हिन्दू' केँ कोना खनग क' सकै छी ?

रौजारी : (रांगक सुबमे) हे - अ सरँ अपन देशे मे थोड़् ओमवायन बहताह ? अ सरँ त' रँस रामे कात दैथेत बहत छथि—ने भावत कहता आ ने हिन्दुस्तान ! अ सरँ त' 'गल्लिया' कहताह 'गल्लिया' !

पाँकिठ-माव : (कमव डोना कए दृ डेग नाचियो नैत छथि) "आग नर माग गल्लिया... आग नर माग गल्लिया" !

रामपंथी : (डपटैत) थम्हू ! (पाँकिठ-माव जेना अघे नाचि कए प्रस्तुतीभूत भ' जागत छथि । ) अ सरँ 'चिप' रौत कतहँ आन ठाम जा क' कक (नेतासँ) देशे-प्रेम खही सभक रँपौती नहि थिक !

नेता : नथि - नथि से हम सरँ कत' कहनहँ ?

खनचव 1 : हम सरँ त' कहि बहन छी— देशे-प्रेमो सँ रँठि कए भेन खहाँ सरँ नेथे-रिष्-प्रेम !

खनचव 2 : 'युनिरसम ब्रदवछड' !

खनचव 1 : (जेना नावा द' बहन होथि) दुनियाँक मजदूब ... !

खनचव 2 : एक हो !

(एकरैव आब नावाकेँ दोहवारैत छथि । तेसब रँव जखन खनचव 1 कहैत छथि—दुनियाँक किसान तखन उँचक्रा, पाँकिठ-माव, भिख-मंगनी, बद्धरिना अपन-अपन ऋणी रँन कएने सीना तानि कए कहैत छथि 'नान सनाम')





रामपंथी : रँद कक ग्रा तमाशा !

नेता : (हाथसँ गशावा करैत) हे सरँ गोठेँ स्वनू त' पहिने ओ की कह' छहि छथि... !

रामपंथी : (गंभीर ऋद्रामे) खहाँ मञ्चवी कक कि तमाशा... देशक रौहब दिस देखरौमे हजे की ?

खनुचव 1 : हर्ज कौनो नहि ।

रामपंथी : रौहबसँ जँ एकठाँ हरा केव मोका खाओत त' खहाँ की थिडुकी केँ रँन क' कए बथलै ?

खनुचव 2 : कथमपि नहि !

रामपंथी : कार्न मार्ल सन महान राजिक राँत हम सरँ किएक नष्टि स्वनै नै तैयाव छी ?

खनुचव 1 : किये नहि स्वनरँ ?

रामपंथी : दुनियाँक सरँठाँ मजदूब-किमान जँ एक स्नब मे राँजे त' एहिमे खपबाध की ?

खनुचव द्वय : (एकहि स्नबमे) कौनो नहि !

रामपंथी : नेनिन जे पथ दैखौननि, ताहि पब हम सरँ किये नष्टि चनरँ ?

रामपंथी : गन्कनारँ !

खनुचव द्वय : जिन्दारौद !

रामपंथी : (ऋष्टी तालेत) जिन्दारौद, जिन्दारौद !

खनुचव द्वय : ( नावा देरौक स्नबमे) गन्कनारँ जिन्दारौद ! (कहैत -कहैत दूनू खनुचव जेरौ सँ छोटका सन केकठाँ नान पताका निकानि क' एक-एकठाँकेँ हाथमे धरैत तथा धवारैत मँचक चाककात नावारौजी करैत चक्रव काँथ नागै छथि । दूनूक पाछाँ - पाछाँ पाँकिठ-माव, भिख-मंगनी, उँचक्का, बदीरना सेहो सरँ जूँठि जागत छथि, सबक हाथमे छोट-छोट नान मंडी, सब का तबह-तबहक नावा दैत छथि । एकठाँ चक्रव काँठि कए जखन ओ सब पुनः भाषण मँचक नग खारि जागत छथि । ऋदा भाषण- मँचक नग पँहँटि कए नावा केव तेरव दोसरे भ जागत छथि । )

उँचक्का : (जेना मजाक करै छहैत छथि) "हम्मब नेता चेयवमैन माओ"



रौंकी नोग : “रौंकी सरं का दूव जाओ !”

चोव : (भाषण मँच पव सँ) एक मिनठ ....खसू, खसू ! (सरँ का चूप भ जागत छथि, आरँ रामपंथी हर्रा खा नेताजी दिसि घुबि कए रौंजेत छथि-- ) गयेह त' हमछँ कह चाहित छनछँ... ने हमवा नेनिन सँ शिकायत छनि ने चयवमैन माओ सँ..... दनुं खपन देशे, खपन नोगक नेन खनेक काज कयनिन खथक श्रेम कयने छनाह भवि जिनगी ; ने गीतासँ शिकायत ने गुरकराणी सँ दनुं खपन खपन जगह मे खवंत महत्त्वपूर्ण छि... म्हादा एतरेँ कह छनहँ जे एहिमे सँ का खथरा किछुओ हरा सँ नथि रँहि कए खायन छन.... शूण्य सँ नहि उगन छनाह का !

(सभ का चूप भ कए चोवक दनीन केँ सुने छथि खा तकव तर्क केँ रूमक प्रयास करैत छथि । ) सरँ एक दोसवासँ जूडन छथि । मार्क्स नथि होगतथि त' भविसक नेनिनो नथि, खा ओ खयनाह तेँ माओ सेहो... प्रत्येक घण्टाक पूर्वपक्ष होग छैक.....

रामपंथी : (हँसत) माने का 'उविजिनन' नथि सरँठा 'डुप्रीकेट', का नहि खसनी सरँठा नकनी !

(सभ हँसि दैत छथि)

चोव : हम कत कहनहँ..... 'सरँ का नकनी, सरँठा चोव !' ङ सरँ त' खहाँ लोकनि कहि बहन छी । (थसँत) हम मात्र कहन, कोनो रौत पूर्ण रूप सँ नर नथि होगत छि... ओहिमे कसुको पवनका प्रसंग बहत छि हँसन !

नेता : (सभक दिसि देखेत) तर्क त' जरँवदस्त देने छथि (रामपंथी हर्राक रांग्य करैत) नीक-नीक केँ पछाड़ा देने छथि ।

खन्नचव 1 : म्हादा हिनकव थारीक नाम की भेननि ?

खन्नचव 1 : कोन नामसँ जानन जायत ङ.... ?

नेता : किये ? 'चोव पवाण' !

(सरँ का हँसत छथि--रामपंथी हर्राकेँ छोड़ा--हनका खपन पवाजय स्वीकार्य नथि छनि)

रौंजाबी : त' सुने जाऊ हमव गीत....

नेता खा दनुं खन्नचव: हँ, हँ, भ' जाय... !

रौंजाबी : (गारैत छथि खा कनी-मनी खंग संचानन सेहो करैत छथि)

एत चोव क्लोतरान केँ डाँटे,

गारै जाय जाडु चोव-पुवान !

कतरौ नर छे कतेक पुवनका,

के छे ज्ञानी के खज्ञान ?

गारै जाय जाडु चोव-पुवान !

गर्तिक भीतव शिर्षु बहे छग,

शिर्षुक भीतव भूव पुवान !

नाच नटे छे गीत गरै छग,

सरँ केव रौहव भीतव ठान !

गारै जाय जाडु चोव-पुवान !

नर त' किछुओ नथिः छग रौखा,

सरँठा जानन छग पहिचान !

एक-दोसवारकेँ जोड्ि दैत थिछि,

धोख् धिनक-धिन् चोव पुवान !

गारै जाय जाडु चोव-पुवान !

*(जेखन ओ एकक रौद एक पाँति गारि बहन छनाह, धीरे-*

*धीरे खानो नोग सरँ गारै - नाटे मे खपनारकेँ जोड्ि बहन*

*छनाह । खन्नचव 1 कतह् सँ एकठाँ गेदा केव माना न' क*

*चोवक गवा मे पहिवा दैत छथि । खन्नचव 2 एकठाँ थावी मे कपूर्वक दीप*  
*राबैत चोवक खवती सेहो क' दैत छथि भिख-मंगनी खागाँ रँटि चोव केँ*  
*तिनक सेहो नगा दैत थिछि । धीरे-धीरे चोव मंच सँ उतवि कए नटेत-गरैत*  
*नोग सभक रौच खारि जागत थिछि—तारह् गीत चनिध बहन छन)*



राजारी : हम छी चोब आ चोब अछु छी,  
माधु-संत घनघोब अछु छी !  
च-ड-ज-म छोब अही छी,  
नदी किनावक जोब अही छी !  
मोब रहग ये करे रखान,  
गारै जाय जाडु चोब-पुवान !  
नहर तनिक छे दह रँ तकव गव,  
पवथि-मवकि कए बाथ रँवारँव,  
प-रु-रँ-म मोब अही छी,  
अन्हारो केव छोब अही छी !  
करे छी अहीकेँ कपठ-श्राम !  
गारै जाय जाडु चोब पुवान !

[नाचेत-गारैत, ठाँन पिपही रँजरेत सरँ का गोन-गोन घुमे छथि । भाषा  
मंच पव मात्र नेता आ रामपथी हरा एक रेवि नचनिहाव मञ्जक दिसि आ एक  
रेवि एक-दोसवाक दिसि देखि बहन डनाह धीरे-धीरे शकाशे मन्त्रिम भ जागत  
अछि आ अतमे कल्लानक समाप्ति भ जागछ । ]

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*

(अमशीः)



## १. शोध लेख

मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (खाँगा)

प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ प्रबोहित/ खाँ मन्त्री-धन केव संदर्भमे

श्री मायानन्द मिश्रक जन्म सहबसा जिनाक रैनैनिया गाममे 17 अगस्त 1934 अ.के. भेनन्हि । मैथिलीमे एम.ए. कएनाक रौद किञ्च दिन अा आकाशरानी पठनाक चौपान सँ संरक्ष बहनाह । तकवा रौद सहबसा कान्नेजेमे मैथिलीक र्नाख्याता खाँ रिभागाध्याक् बहनाह । पहिले मायानन्द जी करिता लिखन्हि, पछाति जा कय हिनक प्रतिभा आनोचानामेक निरंध, उपन्यास आँ कथामे सेहो प्रकठ भेनन्हि । भाई नोठी, आंगि मोम आँ पाखव आँ चन्द-रिन्द- हिनकव कथा संग्रह सभ छन्हि । रिहङ्गा पात पाखव , मंत्र-पुत्र , खोता आँ चिडे आँ सूर्यास्त हिनकव उपन्यास सभ छन्हि ॥ दिशातिव हिनकव करिता संग्रह छन्हि । एकव अतिविज सोले की लैया माठी के नोग, प्रथमं शैल पुत्री च, मंत्रपुत्र, प्रबोहित आँ मन्त्री-धन हिनकव हिन्दीक प्रति छन्हि । मंत्रपुत्र हिन्दी आँ मैथिली दूनु भाषामे प्रकाशित भेन आँ एकव मैथिली संस्करणक हेतु हिनका साहित् अकादमी प्रबन्कावसँ सम्मानित कएन गेनन्हि । श्री मायानन्द मिश्र प्ररौध सम्मानसँ सेहो प्रबन्कृत छथि । पहिले मायानन्द जी कोमन पदारलीक बचना करैत छनाह , पाछाँ जाँ कय प्रयोगरादी करिता सभ सेहो बचनन्हि ।



मायानन्द मिश्रे जीक गतिहास रौध

प्रथम शैल प्रती च/ मंत्रप्रति/ प्ररोहित/ श्री स्त्री-धन केव संदर्भमे

देरास्वव संश्रामक रौध गन्द अस्वव उपाधि लागनहि आदि गप पौथीक समाप्ति पव अचानोकमे मायानन्द जी निथेत छथि । किछ पाश्चात् रिद्वान सेहो अगरेदक दार्शनिक महत्त्वकेँ कम कवरौक जेन अ गप कहैत छथि जे यूनानमे देरतत्र पूर्ण कपसं पन्नरित छन आदा अगरेदिक समाज घुमत्त छन आ२ देरतत्र ताहि द्वारे रिकसित नहि छन । ओ२ लोकनि अ सेहो कहैत छथि जे अगरेदक बचना अस्त्रि पव घुमत्त जीरन यापित केनहाव पश्चिमी आक्रमणकारी कएने छथि । अगरेदिक करि लोकनि आर्वाँभिक सामूहिक संपत्ति आ२ बक्त संरंध आधावित गणसमाज दूनूसँ पविचित छनाह आदा सूर्य ओहिसँ रौहव आरि गेन छनाह आ२ रयिकुगत आ२ अर्द्धश्लक संपत्तिक आधाव रौना ररररर शुक कए देने छनाह । संपत्ति पक्व केँद्रित आ२ परिवार पित्तसत्तामेक छन । आदा मात्तसत्तामेक रररररकेँ ओ२ रिसवन नहि छनाह, कावण ओ२ आपः मातवः कहि ररररचनमे जनदेरीक उपासना आ२ स्वरण करैत छथि, संगहि यकतगण सदियन गणक कपमे स्वरण आ२ उपासना करैत छथि ।

आरि जा२ कए एगेन्स कहैत छथि जे यूनानमे मात्तसत्तासँ पित्तसत्ता प्राचीन कानक सत्तसँ पैघ आत्ति छन । अ आत्ति अगरेदिक कानमे घटित भए गेन छन । श्रमक रेशिग्रीकवणसँ उषोदनमे गौत्रक भूमिका घटि जागत अत्ति, आ२ अर्द्धश्लक रररि जागत अत्ति । गण, गौत्र, अरन आ२ अर्द्धश्लक अमशः रिकास सामूहिक भूसंपत्तिक संगठनसँ होगत अत्ति । अगरेदमे अरुत्तकाव, कमाव(काग्राकाव), नोहाव आ२ धातु शिंपक चर्च अत्ति । प्राचीन अवानमे अस्ववक प्रतिकप अरुत्तक प्रयोग भेन, ओ२ लोकनि एकव उपासक छनाह, आदा अस्वव-उपासक तावतीय जनक प्रभार अवान धवि सीमित छन, आगाँ एकव प्रसाव नहि भेन । तावतमे अस्वव दृष्ट, छथि आदा अवानमे देर दृष्ट, छथि । अस्ववक गविमा सम्पूर्ण अगरेदमे अत्ति । कोनो मत्तन एहन नहि अत्ति जाहिमे कोनो एक रा आन देरतारकेँ अस्वव नहि कहन गेन होए । आदा एहनो अस्वव छथि जे देरक रिरोधमे छथि आ२ गन्दसँ एहन अदेराः अस्ववाः केव नाशिक हेतु आह्राण कएन गेन अत्ति । गन्दक समान अत्ति सेहो अस्ववक नाश करैत छथि आ२ गन्द आ२ रूहस्पति दनु गौठे सूर्य अस्वव छथि । अस्वव देरतारक उपाधि छन । अगरेदमे देर आ२ अस्ववक सदृश अस्वव एकठ भिन्न ररर छन, आदा अस्वव श्रिस जेत छना आदा देर नहि । देरसँ अस्वव रेशी प्राचीन छथि, ताहि द्वारे अस्वव रकण देर आ२ मन्त्र दृष्टक बाजा छथि ।

प्ररोहित

प्ररोहित हिन्दीमे अत्ति आ२ शूचनाक तेसव पौथी थीक । दूररररत जकवा मायानन्दजी स्वरिधाकपेँ आशीरचन सेहो कहि गेन छथि सँ एकव प्रावत्त भेन अत्ति ।

(अस्वरररते)

३. उपासना



सहस्ररौढनि - गजेन्द्र ठाकुर



नन्दक अरारुश्राक रिक्क शुक कएन गेन संघर्ष किछु दिनका रिबाम जेने छन । गाममे रँचा सभ डेढ सान बहन छनन्हि, दबमाला रँहूत दिन धवि रँन्द छनन्हि । गाममे पैघ भाय एकठा भारी बाजनीतित्रेके कहि कए नन्दक पदस्थापन स्फेत्रीय काजसँ हठा कए आखिसमे चित्र पबियोजना डिजागनमे कवरौए देने छनथिन्ह । संगे ग्राहो कहने छनथिन्ह जे अपन आखिस जाडू आडू आऽ रँचा सभ पब ध्यान दिख । सभसँ मिनि जूनि कए बह ।

नन्द पठना आरि कए भायक सभ गप पब ध्यान देने छनथिन्ह । पठनामे रँठीक काँनोजेमे नामाकन कवरौए महारिद्यानयक पाश्चिमे किवाया पब घब तोकन्हि । दूनु रँठीक नामाकनक हेतु श्रेशे पबिष्का केव फार्म सभ भवराय सभके पठना रँजा जेनथिन्ह । भातिजके कहनथिन्ह जे सभके नए कए आरि जाडू, आऽ पहनेजाघाठमे रिहाव सबकावक स्पीमव पकड़रौक सेहो आदेशे देनथिन्ह । कावषा एकठा निजी स्पीमव रँचा रँरौक सेहो चलेत छन, द्वाद ०२ रँशी पसेन्जव नए क२ चलेत छन, संगहि सबकावी स्पीमव अपन समयसँ चलेत छन, ओहिमे पैसेन्जव होए रा नहि । सबकावी स्पीमवमे यात्रीक संख्या सीमित छन ताहि हेतु टिकट केव नियमित हिसारँ छान आऽ सभ यात्रीक रीमा होगत छन, ग्रा रात निजी स्पीमवमे नहि छन ।

भातिजक सग पनी आऽ पुत्र-पुत्री सभ आरि गेनथिन्ह । गंगा ब्रिज काँनोनीमे नन्द एकाकी बहेत छनाह । पबिरावक नोकके सेहो आसपड़ ससँ रँशी मेन-जोन कवरौक अन्नमति नहि देने छनाह । द्वाद पठनामे सभठा उनटि गेन छन । पड़ ससमे एकठा विठायड हेलोजी छनाह, एकठा रिहाव सबकावक पुनिस छनाह आ एकठा रिहाव सचिरानयक कर्मचावी । नन्द दूनु रँठीके नए अगिना दिन तीनु गोठेक घब गेना आऽ सभसँ नमस्काव-पाती कवरौनथिन्ह । रँठी-रँठी सभ स्कून जाए नागन छनन्हि । नन्द पाँच किलोमीठव आखिस पएवे जाथि आऽ घुवती कान घबक काज-उद्यम सेहो करैत आरिथि, जेना रँहस्पतिके हाँ नगेत छन, तँ ओतएसँ हविएव-तबकावी, चाडव दानि गवादि आनरँ ग्रा सभ । हाँ बरिक् छुष्टीक दिन सेहो नगेत छन, आऽ ओछु दिन अपने जाऽ कए सभ ठाँ घबक काज करैत छनाह । रँचा सभक काज मात्र पड़रा धवि सीमित छन । दूध पैकेट रँना अरैत छनन्हि, कावषा उठाना दूहरोए कए अन्नरामे रँचा सभक पड़ ग्रामे भाँगठ पड़त । रँका रँठी जे गंगा ब्रिज काँनोनीमे कहियो ककरो हून उखारि नेत छन आऽ कहियो ककरो थिड़की पब गिष्टी फेकि दैत छन, डेढ सानक ग्राम श्रामक रौद शान्त भए गेन छनन्हि । नन्दके मोन छन्हि जे काँनोनीमे एक रँव रँठीके नए कए पड़ सिक ओहिठाम गेन छनाह आऽ पड़ सिक पनीसँ रँठी क्कमा याचना कएने छनथिन्ह, कावषा कार्यालयसँ अएना उँतव ज्ञात भेन छनन्हि, जे रँठी हूनका पब गिष्टी फेकने छनथिन्ह, जखन ओ२ रँचावी थिड़की नग ठाँ रँहाव दिशि किछु देखि बहन छनीह । छोट रँठी कोनो पैघ रँचाके पाखब फेकि कए मावने छनथिन्ह, जखन ओ२ रँचा सागकिन पब चरन छन, भेन ग्रा छन जे ओ२ पैघ रँचा काँनोनीक एक चक्रव



काँई कए सायकिन नौठेरौक अपन रचनक पानन नहि कएने छन आऽ घुबनाक रौद दोसब चक्रब नगाऽ कए अरैत छी आ रँजेत-रँजेत सायकिन नए आगू रँरुँ बहन छन । छौठका रँरैँ ऋमा याचना कवरौसँ सेहो मना कए देने छनखिन्ह कावण ओऽ सौँटेत छनाह जे हनकब कोनो गनती नहि छनखि । रँरैँ तखन एहि रँरैँ रँचा सभकेँ जखन नन्द पड सौँ सभसँ तेँठेँ कवरौँरँए नेन गेन छनाह तारत धवि रँरँका रँरैँ तँ पूर्णतया पन चरुन झुत्तारक रिपवीत झुत्तारक भए गेन छनाह, ऋदा छौठ रँरैँ अपन झुत्तार पव दूबाग्रह करैत शिव छनाह ।

(अनुवर्तते)

४.महाकार

महाभावत -गजेन्द्र ठाँरुव(आगाँ)

-----

४.रिवाँ पर

पूर्ण भेन रनरासक ररुँ रौवह अतीत,

एक ररुँक छन अरुँतारस रँरुँ कठिन,

दूर्योधनकेँ यदि हनक संकेतक चनए पता,

पुनि द्वादशे ररुँक रनरासक छन प्रथा ।

प्रातः कान सभ रिदा भेनाह रिवाँ नगव दिशि,

कंक नाम्ना धर्मबाज ब्रौह्मण रँरैँ धावित गिनि ।

कौँरुँ १ आऽ चतुर्वग गौँरुँसँ रिवाँबाजके मोन नगाएरँ,

भीम रँरैँ पाचक नाम रल्लभक पाकशाना सम्हावथि ।

रिवाँक पुरीकेँ संगीत नृष अरुँन,

नावी बृहन्नना रँरैँ सिखारुँ,

ग्रथिक नामसँ नरुँन अरुँक कवए वखरौँवि,

सहदेरक नाम तँरुँपान भेन कवथि चवरौँहि ।

बानीकेँ सजारुँथि द्रौपदी नाम धवि सबन्धीक ।





सभ ज्ञा सोचि ब्रकाउन खर-शेखर,  
शाखा रिच शयी-रूम्ह एकठा रिशानमे ।  
जखन रेशे धवि पहचनाह रिवाठ बाजा नग,  
झीकावनहि ०२ सभठा प्रार्थना स्रतः ।  
दिन डन रीति बहन झुदा बानी सुदेष्टाक,  
भाय डन कीचक दूष्ट देखि सेबन्धी भेन झुथ ।  
रिहिसँ पडन कोन देशिक बाजफुमावी डथि ज्ञा,  
कहन रिहिन नहि, डी निग्रु, दासी ज्ञा ।  
झुदा कीचक पहुँचि द्रौपदी नग राजन,  
सुन्दरी दास रैनाडु हम झुथ पागन ।  
सेबन्धी कहनहि, हम रिवाहिता एकदासी,  
खरक पानिता डी नहि पुनि गप ज्ञा राजी ।  
झुदा कीचक रिहिसँ पुनि खनबोध कएनक ।  
पर दिन सुदेष्टा किछ रसु खनरी हेतु कहनक,  
सेबन्धीकेँ कीचक नग जाए तकवा खानए पठेनक ।  
झुदा ओतए देखि रासनाक आँधि भागनि,  
भीमसँ जाए राजनि धिक पान्दरकेँ कहनि ।  
भीम राजन खर जे ०२ डेँठ होखए,  
नाठशानामे रैजाडु खध वाति सोचरँ खेब ज्ञा,  
हमवा की कवरक खडि ओहि दूष्टकेँ ओतए ।  
कीचक रिवाठक सेनाक श्रुथ सेहो डन,  
सेबन्धीक खामत्राकेँ नहि बुनि पहुँचन खभागन ।  
सुत्री रेष धवने भीम ओतए श्रतीक्षित,



केशी पकड़ि पठकन, नात हाथ मावन खीचकरेँ ओतहि ।

भोव होगत ङा गप पसवि गेन चाक दिशि,

कीचकरेँ मावन गंधरपति संबंधीक ।

(खनुरतीते)

### ३. कथा

११.

संगीत

“गँरैया पविराव छैक । तान जूँ चहँत छैक तँ उतबिते नथि छैक” ।

“एकसँ एक करिकाठी सभठी, पविरावमे का गप छोट्टरौमे ककरासँ कम नहि” ।

“से की कहत छियेक । पविरावक कोन कथा, सौँसे छैन मे सभठी करिकाठीये छैत” ।

उदितक हावमोनियमक तानक रिरैचन सौँसे गाय कए बहन छन ।

उदितक राँवू आँह काका दनु गोठेँ रँडु सैघ गँरैया बहथि । खानदानी गायन आँह रादन प्रतिभा हनका नोकनिक बकतुमे छनछि । उदित पाँचे ररिसँ संगीत सीखय नागन छनाह, हनकब सुबक सुनाठारिक उँदाठु आँह खनदाठु सुबकसँ पिता दूख भए जागत छनाह । दूदा गायक नोकक संगीतक ज्ञान अग्रजामे मूदंग, मागन आँह हावमोनियम रँजेरौ तक आँह निर्दिष्ट, राकारेँ गँरौ तक सीमित छन, आँह से प्रायः सभ गोठेँ सहज कसैँ कए जेत छनाह । आँह नोकनिक बाज्य छन, मैकाने महोदय संस्कृत शिक्षाक स्थान पव आँह भाषा खनराँ पव उँताक छनाह । उँदितक पितार्जी एहिसँ संरंधित एकठी कथा कहत छनाह । मैकाने महोदय जखन भावत अँहनाह तँ एकठी गेसुँ हाँसमे ठहबन छनाह । खिडकीसँ राँहव देखि बहन छनाह तँ देखनछि जे गेसुँ हाँसक मैनेजव पविसवमे शरेश कए बहन छनाह, आँह शरेश कएना उँतव गेसुँ हाँसक दवरौनकेँ सैव छुरि कए श्राम कएनछि । राँदमे जखन मैकाने हनकासँ पडनछि, जे अँह मैनेजव छी आँह तखन सामान्य दवरौनकेँ सैव छुरि कएन कए श्राम कए बहन छनहुँ । एहि पव हनका अँह छुँतव छैछनछि, जे ओँ सामान्य दवरौन नथि छन रवन् संस्कृत सेहो छन । ताँहि दिन मैकाने सोचि जेनछि जे भावतकेँ पवार्जित कवरौक नेन भावतक संस्कृतिकेँ नष्ट कवए पडत । आँह एहि नेन संस्कृतकेँ नष्ट कवरौक श्राम नेनछि, जकव अँहतेँ भावतीय कना संगीत आँह संस्कृतिसँ पवाँदूख भए जएताह । अँह तारत, उँदित एहि तवहक राँतारवणमे आँगाँ रँहए नगनाह । अँहरेज नोकनि द्वावा पाँशाँ सभ्तीकेँ खनराँक श्रयासक पबुब, भातखुँद आँह वामाँमाँ द्वावा देन गेन समीचीन उँतव शिक्षाक क्खेएमे कएन नथि भए सकन, उँदितक राँन योन अँहनागत छन । अँह तारत उँदित संगीतोक्ताक भातखुँदकेँ आँदर्श रँनाए आँगाँ रँहए नगनाह । नोक गँरैया कहए तँ कोनो राँत नहि, एक दिन आँहत जखन एहि गँरैयाक सोमाँ समस्त अँखुँद भावतक मनसि श्रैफाँस देखत, अँह तारत ।



काका आऽ पिताक संवम्भणामे गामक वामनीना मडनी द्वावा श्रुत कएन जायरना नाटकमे सेहो उदित भाग जेत डनाह, हुनकव गाउन गीत गाममे सबक ठोव पव आरि गेन डन । झुदा खेती रीबी तेहन सन नहि डनहि । एक रीघा रैठाग करैत जागत डनाह, सेहो सुनए पडहि जे गरैय्याजी रूते की खेती कएन होएतहि, झुहसँ गउनाग आऽ हाथसँ काज कवरामे रँडु खतव डेक ।

जीवनक बख आगाँ रँडुत बहत झुदा रिदेशीक शोसनमे सेहो धवि संभर नहि होगत डन । कखनो हेजा तँ कखनो झुग तँ कखनो मनेबिखा । अहिना एक रँव गाममे झुग पसवन । लोक एक गोठाकेँ डहि कए आरय तँ गाम पव दोसव राजि मृत पडन बहत डन । उदितक मायकेँ सेहो पेठ आऽ नाक चनय नगनहि, देह आगि जेकाँ जडुत बहहि, झुदा रँठाकेँ नग नहि आरय देखिन्ह जे कतहु हुनको झुग नहि भए जागन्ह । दू दिनका रौद रँचारी दुनियाँ डोडि देनहि । दू-रौप रँठा दाह संस्कार कए अएनाह । दू गोठेक आँखिमे नोव जेना सुखा गेन डनहि । पिता गम-सुम बहए नगनाह । कर्षसँ सुव नहि निकनहि, झुदा हस्त पविचाननसँ रँठाकेँ अग्रास कवारथि । दू-तीन रँथ रीतन उदितक रँयस रँह १०-११ सान होएतहि आकि पितारकेँ मनेबिखा पकडि नैनकहि ।

बातिमे निन्द नहि होगन्ह । सिवमामे भातखन्ड सुवनिपि बहत डनहि, ताहि आधाव पव रँठाकेँ किडु गारि सुनारए कहत डनखिन्ह । उदितकेँ आभास भए गेनहि जे माताक संग पिता सेहो दूव भए जएताह । अ सोचि कोडु हाँठि जागन्ह । फलनक श्रुतार सेहो आरि पिता पव नहि होगत डनहि । बातिमे खबखरी सैस जागत डनहि । उदित सभठा केखरी-ओरुना सभ ओरु । दैत डनखिन्ह, झुदा तेयो खबखरी नहि जागत डनहि । लोक सभ दिनमे आरि खोज-पुडाडि कए जागत डनहि । गामक नाटक मडनी सेहो रँडु डन कावण झुदा कार्यकर्ता हर्षित नावायण डनाह आऽ ओऽ रँनावस चनि गेन डनाह कोनो नाटक मडनीमे । ओऽ गाम आयन डनाह आऽ जखन सुननहि, जे उदितक पितारक मोन खवाप डहि तँ पुडाडि कए अएनाह ।

“हर्षित । हम तँ आरि जाऽ बहन छी । उदित लेना छथि । काका पव रँवन रँनताह ताहिसँ नीक जे अपन सैव पव ठाडु भए जाथि, संगीत साधना कवथि । अ देरक नीना अडि जे एहि समय पव अहाँ गाम आरि गेनहुँ । गामक हरामे जेना रोगक कीटाणु आरि गेन डेक । एतए मूँ ठाँ निश्चित डेक आव किडु नहि । एहना स्थितिमे संगीतक मूँ भए जाए ताहिसँ नीक जे उदित अहाँक संग रँनावस नाटक मडनीमे चनि जाथि । अहाँ रूते अ होएत हर्षित” ?

“की कहत छी गुनारँ भाग । उदित अहाँक पुत्र छी आऽ हमव क्या नहि ? झुदा संगीतक पावथीक प्रतिभा नाटक मडनीमे कृषित नहि भए जएतेक । नाटक मडनी तँ हमवा लोकनिक सनक अप्प ज्ञानीक जेन डेक” ।

“नहि हर्षित । ओतए उदितकेँ हनुमानक आऽ वामक आशीरदि भेटतहि । संगीतक कतेक वास पम्क डेक । नर-नर रीधा पाव कवताह आऽ अप्प समयमे संगीत हुबेतहि । ओतएसँ हिनकव साधना आगाँ रँडुतहि” ।

गुनारँ जेना हर्षितक रौठ जोहि बहन डनाह । रँजिते-रँजिते श्राप जेना उखडए नगनहि । रँठाक माथ पव खबखरागत हाथ बखनहि, तँ दोगि कए हर्षित गंगा जन आनि झुहमे एक दिशिसँ देनहि झुदा जन झुहक दोसव दिशिसँ ठगवि कए रौहव आरि गेन ।

काशीक तँ पव रिद्यापतिक रँडु सुख साव पाउन त्रुख तीरे सँ नः कए भिन्न-भिन्न धार्मिक आऽ लौकिक गीत गारथि ओकव सुव रँनारथि आऽ ताहि जेन उदितकेँ शरीसा सेहो भेटहि । आहक नूनता सेहो कहियो कान उपनहिक माझकेँ रोकि दैत डेक । उदित मात्र ११ रँथमे काशी गेनाह आऽ ताहि द्वारे



हूनकब स्त्रबक आ२ स्त्रबक रँहूत गौष्टे ग्राहक रँनि गेनन्हि, ग्राहक नधि शौषक कइ। सभठौ पविश्रीम हिनकासँ कबरौए त्रेत डहनन्हि आ२ नाम अपन द२ दए जागत डनाह। ऋदा उदित समय, आग्र आ२ ग्वकक आसमे दिन काँटि बहन डनाह। दिन रँड ऋशेकिनसँ कठैत डैक ऋदा फेब नागए नगैत डैक, ऋदा जेँ एकहि ठवाँ पब चलेत जागत डैक तँ नागए नगैत डैक जे सानक सान कोना रीति गेन। उदित ११ रर्यसँ २७ रर्य धवि नाठक कस्पीमे काज करैत बहनाह।

“शौस्त्री जी। अ स्त्रब तँ हमली रँनउने डी, ऋदा मोन कनेक रिचनित अडि ताहि द्वावे दोसब स्त्रब नधि रँनि पारि बहन अडि। उदितकेँ रँजा२ त्रेत डी। ओहो हमवासँ किड सिखने अडि, किड समाधान निकानि त्रेत”। महान संगीत उपासक भड्ड जीक सोमाँ हर्षित रँजि बहन डनाह।

“हँ हँ। अरथ रँजा निठक”। भड्ड जी रँजनाह।

ऋदा उदित जखन आरि कए संगीतकेँ जाहि सबनतासँ सिद्ध कए स्त्रब गारि देनन्हि, ताहिसँ भड्डजीकेँ रँमरामे भाँगठ नहि बहनन्हि, जे रासुरिक कनाकाब हर्षित नहि उदित डधि। भड्ड जी एकठौ एहन शिष्यक ताकिमे डनाह जे प्रतिभारान आ२ साधक होथि, जिनका भड्डजी अपन सभठौ कना सौँपि निश्चित भए दए सकथि। आग से शिष्य भेटि गेनन्हि हूनका। उदितकेँ अपना आश्रीममे चनरौक जखन ०२ नोत देनन्हि तँ उदित दौगि कए अपन शक्रोग्रा चनि गेनाह, आ२ पितक होठेकेँ निकानि कए जे कनगाग शुक कएनन्हि, तँ १३ सानसँ लोकन धाब डहब तोडि रँहबाए नागन।

नाठक कस्पीमे जेहन एककपता डन, तकब रिपरीत ग्वकआश्रीममे रँरिधता डन। सभ दिन उदित सूर्योदयसँ पूरँ उठैत डनाह आ२ संगीत साधनामे नीन भए जागत डनाह। शिष्य ग्वककेँ पारि धन्य डन आ२ ग्वक शिष्यकेँ पारि कए। दिन रीतए नागन ऋदा भातखड्ड आ२ पब्रकब महाबाज द्वावा संसूत साहित्यक आधाब पब संगीतक कएन गेन पब्रबोहाब तँ गम्भीक धाब जेकाँ निर्मन आ२ चिब डन। जतेक गँगीब उदित ओहि धाबमे उतबथि, मोन कबन्हि जे आब गँगीब जाग। २३ सान धवि ग्वकक आश्रीममे उदित बहनाह। ३१ रर्यक जखन डेनाह तँ ग्वक अ कहि रिदा कएनन्हि जे उदित आरँ खलँ शिष्य नहि ग्वकक डूमिका कर। संगीतशौस्त्रक पुनबोहाब भए चूकन डैक, आ२न लोकनिक पाशाए संगीत पड्डति खनरौक श्रयास रिहन भए चूकन अडि, आ२ आरँ भावत स्त्रतत्र सेहो भए चूकन अडि। जाडू आ२ शौस्त्र द्वावा श्रदत संगीतक दोसब पुनजर्गिबषक योहा रँनू।

३१ रर्यक आग्रमे स्त्रतत्र भावतमे उदित लोकबी तकनाग शुक कएनन्हि। काशीक एकठौ संगीत रिद्यालय सहर्ष हूनका स्त्रीकाब कए नेनकन्हि। ऋदा ३७ रर्यक संगीत साधनाक साधन स्त्रब काशी रिश्रिद्यालय तक पहुँचि गेलैक। शिष्यक पकिड नागए नगनन्हि। श्रिहाक श्रतीक, ऋदा भावतक नर स्त्रकपमे कतेको गौष्टे शौस्त्रीय संगीतक रँपाब सेहो शुक कएनन्हि, ऋदा श्रचाबसँ दूब मात्र ग्वक शिष्य पबस्पवार्केँ आधाब रँना२ कए आगू रँडरँत बहनाह उदित। हूनकब शिष्य सभ देशे रिदेसमे नाम कबए नागन। तखन काशी रिश्रिद्यालय शिष्यक रूपमे हिनका नियकत कए नेनकन्हि। ऋदा ओतए नियम डन जे रिना पी.एच.डी. कएने ककरो रिभागक अध्यापक नहि रँनाउन जा२ सकैत अडि। ऋदा रिभागमे उदितसँ रँशी श्रैष्ट तँ का डन नहि। जेना आ२न जन कए गेन डनाह, ग्वकनसँ पडनिहाबकेँ कोना डिग्री नहि भेटैत डन आ२ ओ२ सबकाबी लोकबीक योग्य नहि होगत डन। उदितक नगमे सेहो ताहि श्रकाबक कोनो गुपचाबिक डिग्री नहि डनन्हि। रिश्रिद्यालयक सीनेठक रँसकी भेन आ२ ताहिमे रिश्रिद्यालय अपन नियमकेँ शिथिन कएनक, आ२ उदितकेँ संगीतक रिभागाध्यक्ष रँनाउन गेन। ओतए सेरानिबृति धवि उदित अपन श्रशासनिक क्षमताक पविचय देनन्हि। भातखड्डक अन्नकप कतेक खड्डमे संगीतक शौस्त्रक पविचय देनन्हि उदित। उदितक शिष्य सभक दृष्ट-श्रैर्य रेकार्ड रँहबा गेन डनन्हि, ऋदा उदित सृष्टियो आ२ जनताक समक्ष अपन कार्यक्रमसँ अपन साधना तंग नहि करैत डनाह। भोबक साधनासँ साँमक स्त्रब भेटैन्हि आ२ साँमक साधनासँ भोबक। हूनकब शिष्य सभ उदितकेँ रिना कहने एकठौ अन्ननन्दन कार्यक्रम बखनन्हि। ओतए रेकार्डिङ केब रररस्था डन। उदित अन्ननन्दन कार्यक्रममे अएनाह। आग्र १३ रर्यक डनन्हि हूनकब। त्रीता बहथि देशेक सरश्रैष्ट शौस्त्रीय संगीतकाब लोकनि आ२ उदितक शिष्य-मन्तनी।





8.

भजन रिनय

नम्नीनावायण हमव दूः ख बखन हवरँ ॐ ॥

पतित उधावण नाम खहाँके सभ कए खँडि ॐ,

हमवा रँव पवम कठोव कियक होग डी ॐ । ।

बिबिध ताप सतत निशि दिन तनरँ खँडि ॐ ॥

खहाँ रिन दौसव के त्राण कवत ॐ ॥

देर दनुज मनुज हम कतेक सेरन ॐ,

कियो ने सहाय तेना रिपति कान ॐ ॥

कतेक कहँ खहाँके जौँ ने प्रसा कव ॐ,

वामजीके चारँ खहाँक के शेष बाखन ॐ ॥

9.

भजन रिनय

एक रँव तारू ॐ भगरान,

खहाँक रिन दौसव दूः ख केहवनाखन ॥

निशि दिन कखनौ कन न पडँ खँडि,

कियो ने तकेये खान

केरन खाशि खहाँक चवणके खाय कक मेरे त्राण ॥

कतेक अधमके तावन खहाँ गनि ने सकत कियो खान,

हमव रान किड नाहि सुनए डी,

रैहिव भेन कते कान ॥

शरैन श्रताप खलक खडि जगमे

के नहि जनए खडि खान,

गणिका लिङ्ग खजामिन गजके

जनसे रँचारन श्रां ॥

जेँ नहि प्रगा कवरँ वघुनन्दन,

रिपति पवन निदान,

वामजीके खरँ नाहि सहावा,

दोसब के नहि खान ॥

10.

महेशरानी

सुनु सुनु ओ दयान,

खलँ सन दोसब के छथि प्रगान ॥

जे खलँ के शिवां खरँए खडि

सरँके कयन निहान,

हमब दुःख कखन हवरँ खलँ,

कहुने मावी नान ॥

जठै रँच गगा छथि शोभित चन्द्र रिवाजथि भान,

मावीमे निरास कबए छी दुथियो पव खति खयान ॥

वामजीके शिवांमे बाधु,

सुनु सुनु ओ महाकान,



रिपति हवाङ्गु हमरो शिरजी कक खाय प्रतिपान ॥

11.

महेशरानी

काट्टू दूःख जंजान,

घुस्पा कक चञ्चल्लुव दानी काखट्टू दूःख जंजान ॥

जेऊँ नहि दया कवरँ शिरशकव,

ककवा कहरँ हम खान,

दिन-दिन रिकन कतेक दूःख काठरँ

जेऊँ ले कवरँ खहाँ खयान ॥

जठ्ठा रीच गंगा छुथि होतित,

चन्द्र उदय खञ्जि भान,

मृगछाना डामक रँजरेँछी,

भाँग पीरि तिनकान ॥

नय त्रिशूनकाट्टू दूःख काट्टू,

दूःख हमरो रेगि कक निहान,

बामजी के खाशा केरन खहाँके,

रिपति हक कवि खयान ॥





12.

महेशरानी

शिर कक ने श्रतिपान,

खलौ सन के खड्डि दोसब दयान ॥

भस्म खंग शीश गंग तीनक चन्द्र भान,

भाँग पीरि खुशी बली ,

बली दुखिया पब खयान ।

रँसला पब घुमन खिबी,

भूत गण साथ,

डमक रँजारी तीन

नयन खड्डि रिशान ॥

माड् ीमे निरास कबी,

बूठरँथि हीवा नान,

बामजी के रँब शिर भेनाह कंगान ॥

13.

महेशरानी

शिरजी केहेन केजौँ दीन हमब केहेन ॥

निशिदिन टैन नहि



चिन्ता बहे भिन्न,

ताहू पब त्रिभिध ताप

कब चाहे थिन्न ॥

पुत्र दावा कहन किड ले सुले अडि काख

ताहू पब पविजन ले अडि हमब प्राण ॥

अति दयान जानि अहाँक शिवा अयनहुँ कानि,

वामजरी के दुःख तक अशिवा जन जानि ॥

(अनुरर्तते)



आ.पद्म गंगेशी गुजन

गंगेशी गुजन(1942- )। जन्म स्थान- पिनखरौड़, मधुबनी। एम.ए. (हिन्दी), रेडियो नाटक पब पी.एच.डी.। करि, कथाकाव, नाटककाव आ' उपन्यासकाव। मैथिलीक प्रथम टोरेण्टिया नाटक बुधिरुधियाक लेखक। उचितरजा (कथा संग्रह) क लेन साहित अकादमी पुरस्कार। एकब अतिबिस्तृत हम एकठा मिथ्या पविचय, लोक सुनु (करिता संग्रह), अन्हाव- गजोत (कथा संग्रह), पहिन लोक (उपन्यास), आग भोष्ट (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलाचन की लोक कथाँ, मणिपद्मक लेका- रनिजाबाक मैथिलीसँ हिन्दी अनुराद आ' शिङ्ग तैयाव हे (करिता संग्रह)।

३. गाम

चावि पाँती मातृभूमि मिथिलाक नाम

पाँच हून देशे केव शहीदक नाम

लोव चावि ठोप हमब त्रिम केव

स्रष्टातिमे अर्यातीतक नाम

माँष्टि, मेघ, राघ, सौँस परतकेँ

नदी, वृष्क, पम्फ्री आँ निर्विकेँ



अपन सूर्य तावा आऽ चन्द्रमा,

ग्राम नगव गनी केव रसातक नाम

गुजनक सत्रे स्वाधीन श्राम

गर्हा बहन छथि खेवसँ एखन ७२ ऋकत

हृनक मन, रीहि आँखि अथक हौसना

चकचक देहक त्रैमकण्ठे सादव श्राम

हे हमव रिरक, हमव दूः ख-सुख,

हे हमव गाम ।

अ.पद्य ज्योति सा चौधरी



ज्योतिके [www.poet.r.y.com](http://www.poet.r.y.com) संपादकक चाँयस अरार्ड (अग्रजो पद्यक हेतु) भेठन छन्हि । हृनकव अग्रजो पद्य किछ दिन धरि [www.poet.r.y.soup.com](http://www.poet.r.y.soup.com) केव ऋथा पृष्ठा पव सेहो बहन अछि । ज्योति मिथिना चित्रकनामे सेहो पार्वगत छथि आऽ हिनकव चित्रकनाक श्रदर्शनी अर्निग आँठ ह्रूप केव अंतस्नात अर्निग अँडरे, नँडनमे श्रदर्शित कएन गेल अछि ।

ज्योति सा चौधरी, जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७५; जन्म स्थान -रेंहराव, मधुबनी ; शिक्षा- स्नायी रिरकानन्द मिडिन स्कूल ठिका साकची गर्भ हांग स्कूल, मिसेज के एम पी एम अन्टव कानेज, अन्दिवा गाँधी उपन युनिरसिटी, आग सी डरँनु ए आग (काँस्ट्र एकाडर्शनी); निरास स्थान- नन्दन, यू.के.; पिता- श्री श्रुतकव सा, ज्ञमशेदपुव; माता- श्रीमती सुधा सा, गिरीपट्टी । "मेथिनी निखरौक अग्राम हम अपन दादी नानी भांग रँहिन सबके पत्र निखरौमे कएने छी । रँहसँ मेथिनीसँ नगार बहन अछि । - ज्योति

रौनश्रैम

रौनपनक किनकावी लूथक ताप सऽ भेन मूक,

पोथी रौवि कोदावि पाडेते हाथक मावि अचूक ।

कादो बौद रँसातमे श्रेम केनाग भेन मजरूबी,  
गवीरूक पवाकाग्रा ! पेठै आ पीठक घटेँत दूबी,  
किछ धनहीनता आ किछ माता पिताक मुर्खता,  
रूदा, सभसँ रँसी स्नाथी समाजक संरेदनहीनता,  
जे रँनक केँ माताक आश्रिय सँ रँखित केनक,  
नेथनि के छीन कोमन हाथमे कबची धरेनक,  
मान जानक सेरा कबैत रँन्य जीरन रुदकप,  
अपने भरिषारकेँ दविद कबैत अज्ञान आ अरूँम,  
रिद्यापार्जनक ककवा हुँसति ? स्थिति त२ तेहन भेन,  
चोब रँनक आतुव अछि रँनपन दू दाना अन्न नेन ।

डा.पद्म गजेन्द्र ठाकुर

मोनक जइँ मे

पकितरँह पनः किछ नथिँ जानि किँ सेजन

मोनक जइँ मे बाखन सतत कार्यक एम भेठैन ।

परत शिख सौमँ अरँैत हियाडु गमारथि,

रँन घठन जेकब पाव दूः थक सागब कबैत ।

कबरूक सिद्धि सौमँ छथि जे क्यारिकन,

भोखनागत प्यासन अवापथ मे हँ रँेकन ।

मोनक जइँ मे बाखन सतत कार्यक एम भेठैन,

पकितरँह पनः किछ नथिँ जानि किँ सेजन ।



हाथ दए तीव आनि दए करौंठ तखन तत,

मनसिक अन्हावक मध्य रिचवणहि सतत ।

प्रकाशिक ओतए कए उपेक्षि ठामहि तखन,

रिपत्रिक पढ़न कए आरि नहि होएत अरिन ।

मोनक जइहि मे बाखन सतत कार्यक एम भेटैन,

पकिंतुरैह कए पुनः किञ्च जानि किए सेजन ।

कवरौक अन्धि लोक कन्याक मन रचन कर्महि ,

नहि अन्धि अपन अन्धिमान छोटैरि अधः पथ गी ।

घुबत अन्धिमान देशिक तखन अन्धिमानी हमहूँ छी,

नहि तँ हूसियेक अन्धिमान नए कवरि पुनः की ।

मोनक जइहि मे बाखन सतत कार्यक एमक गी,

पकिंतुरैह पुनः किञ्च जानि कए सेजन छी ।

## 7. संस्कृत शिक्षा च

मैथिली शिक्षा च (मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - तन्मन्तुः उंजुरान- मानुषीमिह संस्कृतम्)

(आगाँ)

-गजेन्द्र ठाकुर

गते शौक न करीत भरिषा नैर चिन्तयेत् ।

रर्तमानेश कानेश रर्तयन्ति रिचम्णाः ।



रयं गदानीम यत् स्वभाषितं त्रुतरन्तुः तस्य अर्थः एरं अस्ति- गते शौकं न करीत । रयं गत रिषये प्रीतं रिषये दूःखं न कवणीयं तथैरं भरिष्य अस्ति स्नपनः न द्रष्टारः । भरिष्य एरं भरिष्यति एरं कविष्यामि- गति स्नपः अस्ति न द्रष्टारः । दूखं अस्ति न कवणीयम्- भूते यत् श्रुतम् अस्ति- पूर्यं यत् श्रुतम् अस्ति- तत्र दूःखं अस्ति न कवणीयम्- अत्रे यत् भरिष्यति तस्य स्नपः अस्ति न द्रष्टारः । रतमानकाले एरं रररणीयं- रतमानकाले एरं तातरं- तस्मिन् रिष्य एरं यद कवणीयं यत न कवणीयं तदरिषये चिन्तनीयम्- एरं रिचरूणाः नाम रूक्षिमान्- रूक्षिमन्तुः एरं करीति ।

कथा

एकम् अवाप्यम् अस्ति । अवाप्य एकः संन्यासी अस्ति । सः प्रतिदिनं तिस्र्याचरुं प्रश्नां जीरुं करोति । तस्य हस्तु एकं सुवर्णं करुणम् अस्ति । सः चिन्तयति सुवर्णकरुणं दानं करोमि- गति । सः एकस्मिन् दिने जनान् आद्वयति- घोषणां करोति । रररः जनाः समिनिताः भरन्ति । तदा संन्यासी घोषयति- अहम् अहम् निर्धनाय सुवर्णकरुणं ददामि । अत्र कः निर्धनः अस्ति- गति । तदा रररः जनाः- अहं निर्धनाः, अहं निर्धनाः गति संन्यासी समीपम् आगच्छति । पवन्ति संन्यासी कस्य अस्ति सुवर्णकरुणं न ददाति । एकस्मिन् दिने तस्य देशस्य महाबाजः तेन् मार्गेन् आगच्छति । सः संन्यासी रचनं त्रुषोति । सः संन्यासी आश्रमं गच्छति । संन्यासी महाबाजं समीपं आद्वयति- सुवर्णकरुणं महाबाजाय ददाति । सः संन्यासी पृच्छति । अहं महाबाजा अस्मि । मम समीपे श्रुतम् अस्ति । पवन्ति भरान् मम प्रते किमर्थं सुवर्णकरुणं ददाति । तदा संन्यासी रदति- यस्य आशा अधिकम् अस्ति तस्य एरं अहं सुवर्णकरुणं ददामि । यद्यपि भरान् महाबाजः अस्ति- तथापि भरतः आशा अधिका अस्ति । भरतः गच्छा अस्ति- अहम् अत्र वाजस्य उपवि आश्रमं करोमि- जयं सम्पादयामि- गतोपि अधिकम् अस्ति सम्पादयामि । अतः भरान् निर्धनः एरं । अतः अहम् एतद सुवर्णकरुणं भरते दान्तुम् गच्छामि । संन्यासिनः रचनं त्रुषा महाबाजस्य त्रानोदयः भरति । सः नञ्जया स्नवाजं प्रति गमिष्यति ।

सम्भाषणम्

नमोनमः ।

केचन् श्रुणार्थकाः सन्ति । किञ्च श्रुणार्थकं शिद्धं अस्ति ।

तत्र सन्तु श्रुसिद्धाः सन्ति । ओतए सात णी श्रुसिद्धं अस्ति ।

यथा ।

किम्

रुत्र

कति





चल्लवः । चाबिष्ठा ।

सूर्योदयः प्रातः काले भवति । सूर्योदय प्रातः काले नो गत अस्ति ।

सूर्यास्त सायंकाले भवति । सूर्यास्त सायंकाले नो गत अस्ति ।

बमेशः दशरादने रिद्यानय गच्छति । बमेश दस रजे रिद्यानय जागत अस्ति ।

भरती कदा पाक करोति ? अहाँ (स्त्रीनिग) कथन भोजन रनरैत छी ?

मित्रः रिदेशतः आगच्छति । मित्र रिदेशसँ अरैत छथि ।

सखी चेल्लगतः आगच्छति । सखी चेल्लगसँ अरैत छथि ।

गम्भी हिमानयतः शरहति । गम्भी हिमानयसँ शराहित नो गत छथि ।

भरती ऋतः मोदकम् आनयति । अहाँ (स्त्रीनिग) कतएसँ मोदक अरैत छी ।

स्नाह्य उतमम् अस्ति । स्नाह्य उतम अस्ति ।

भरती स्नाह्य कथम् अस्ति ? अहाँक (स्त्रीनिग) स्नाह्य केहन अस्ति ?

अनीता पाठनार्थ रिद्यानय गच्छति । अनीता पढे रोक नेन रिद्यानय जागत छथि ।

अनीता षुषधार्यम् षुषधानय गच्छति । अनीता षुषधिक नेन षुषधानय जागत छथि ।

गृहणी भोजनार्थ पाकशीर्षा गच्छति । गृहणी भोजनक नेन भनसाघव जागत छथि ।

भरती किमर्थ पठति ? अहाँ किएक पढे त छी ?

भरतः एतेषाम् अर्थम् सम्यक ज्ञातरतः । गदानीम् भरतः माम् श्रम पृच्छतु । अहम् उतव रदामि ।  
गदानी भरत एकः आगच्छतु । अनन्तव भरतः सरै तम् श्रम पृच्छतु । बाजा उतिग्रतु । भरान्  
आगच्छतु । गदानी भरतः श्रम पृच्छतु । सः उतव रदति ।

भरान् कदा निद्रा करोति । अहाँ कथन निद्रा करैत छी ।

भरान् ऋतः आगच्छति । अहाँ कतएसँ अरैत छी ।

भरान् किम् खादति । अहाँ की खागत छी ।

भरतः अध्यायन कथं प्रचनति । अहाँक अध्यायन केहन चनि बहन अस्ति ।

भरान् किमर्थम् गीतं गायति । अहाँ किएक गीत गरैत छी ।



भरान् क्वत्र रसति । खर्हौ कतए रसित ड्डी ।

मङ्गनाथः गड्डति । मङ्गनाथ जेत खड्डि ।

गृहं गतरान । गृह गेन ।

मङ्गनाथः गृहं गतरान । मङ्गनाथ गृह गेन ।

मङ्गनाथः न गतरान । मङ्गनाथ नहि गेन ।

मङ्गनाथः खागतान । मङ्गनाथः खरि गेन ।

मङ्गनाथः उपरिष्ठान । मङ्गनाथ रैसि गेन ।

पठति- पठितरान पठत खड्डि- पठनक

निखति- निखितरान निखेत खड्डि- निखनक

करोति- प्रतरान करेत खड्डि- कएनक

खल्लिका पीतरती/पीतरती खल्लिका पिरैत खाचि/ पीनक

खल्लिका निखति/ निखितरती खल्लिका निखेत खड्डि/ निखनक

खल्लिका गड्डति/ गतरती खल्लिका जागत खड्डि/ गेन

खल्लिका खागड्डति/ खागतरती खल्लिका खरैत खड्डि/ खल्लिका खरि गेन

रौनकः गतरान रौनक गेन

रौनिका गतरती रौनिका गेनि

एनीडितरान/ एनीडितरती खेनेनक/ खेनेनीह

पृष्ठामि- त्रुशोमि पृष्ठेत ड्डी (हम) / सुनेत ड्डी (हम)

रदामि- उक्तुरान -उक्तुरती रजगत ड्डी/ रजनहूँ/ रजनीह

खहम् खद्य पश्यामि हम खाग देखेत ड्डी

खहं स्त्रुः द्रक्ष्यामि हम कान्ति देखरौ

मङ्गनाथः गमिष्यति मङ्गनाथ जायत ।

रुदरती गमिष्यति रुदरती जयतीह

भरन्तुः किम् किम् कविष्यन्ति

अहं कारं लेखिष्यामि ह्यं कारं निखरं

रयं कारं निखिष्यामः ह्यं सत्त कारं निखरं

तस्य नाम ओमः ओकव नाम ओम अङ्गि

ओम उपरिशीतु ओम रैसू

तस्याः नाम आस्रा ओकव नाम आस्रा अङ्गि

आस्रा उपरिशीतु आस्रा रैसू

गीतम्

रौनोहम

रर्षं प्रसावयन्तु हौनी आयाति

रौनोहम जगत् भ्रमयामि

रर्षं ह्यं स्वथं प्रसावयन्तुम

दुःखेन निरावयन्तुम गङ्गामि ।

रौनोहम जगत् भ्रमयामि ।

राणी मधुवा पवन्तु प्रथवा

मेनयन्तुम उँटः स्रवे

शीतुं समुह्नि उँल्लतः मार्गे

सर्गे मिनिल्ला गङ्गामः

रौनोहम जगत भ्रमयामि ।

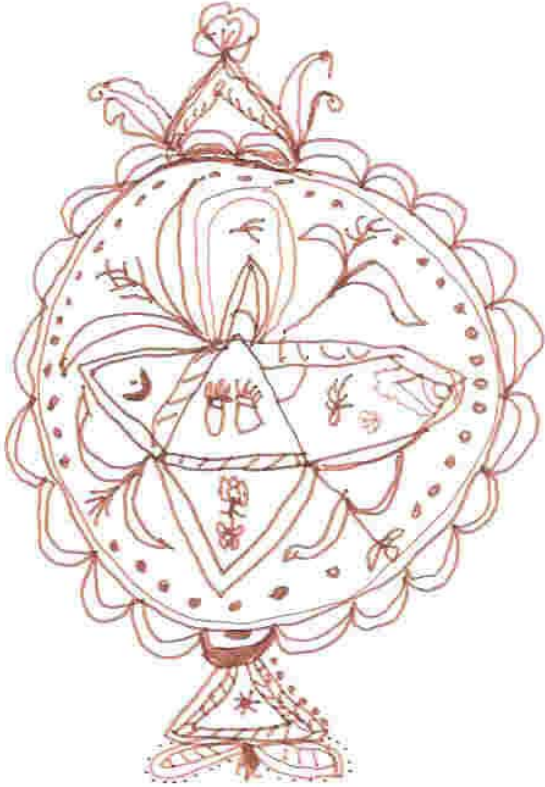
(अन्वरतते)

+ मिथिला कला (आर्गा)

षडदन खविपन

मिथिनामे भगवती पूजाक खरसव पव ग्रा खविपन पाङ्गन जागत अछि । एतय देरी भगवत पुरानक षष्ठीकोण यंत्र पावन गेन अछि ।

छः ठाँ कमन दन एहिमे अछि । आदिशक्ति तुरनेश्वरीक पद चिन्ह आऽ पञ्चापचाव पूजाक सामग्रीसँ हकत ग्रा खविपन अछि ।



लक्ष्मी यन्त्र

खबरतते)

१. पारनि संस्कार तीर्थ



नूतन माः गाम : रौलराव, मधुरैनी, रिहाव; जन्म तिथि : ३. दिसम्बर १९७६; शिक्षा -  
बी एस सी, कन्याः काँलेज, बिनागः एम एस सी, काँपोर्नेटिँर काँलेज, जमशेदपुर; फेसन



डिजागनिंग, एन. आर्. एफ. डी., जमशेदपुर। "मैथिली भाषा आ' मैथिल संस्कृतिक प्रति आस्था आ' आदव हमव मोनमे रँहसं' रँसन अछि। गँठबनेठ' पव तिवहताम्ब निपिक उपयोग देखि हम मैथिल संस्कृतिक उज्ज्वल भविष्यक हेतु अति आशागित छी।"

निर्बंध - नूतन सा

रौवातीसकोव

आजुक आधुनिक परिवेशमे रिराहक पुवान मान्यता आव रिधि रिधान अपन प्रतीकामेक स्वरूपमे शेष रँचन अछि। दिन पव दिन ओकव स्थान अपरार्य सँ पविर्पूर्ण पविर्पाठी नव बहन अछि। हम सरँ पौवाणिक आ' तर्कसंगत रिचावक अरशेष मात्र देखि बहन छी। आरँ निर्वतव जीरनशीनीमे आधुनिकताक समारेश भव बहन अछि। एकव किछु श्रवम्ब नातो अछि, जेनाकि रँहँ याँ शिक्षा आ' स्नास्थ्य रारस्था। किन्तु आधुनिकताक दुष्पविशामक सूचि रँनारी तव ओ' अन्तु बहत।

रिराहादिमे जे आर्डरव आ' रिनासितापूर्ण प्रदर्शन होगत अछि ओकव निरहित सरँ साधावणक जेन काह्वी कठिन अछि। पानन-पौषण, शिक्षा-दीक्षा कएनाक रौद एक साधावण कग्यापम्ब रिराह समारोहक उच्चरर्गाय प्रदर्शनक आर्थिक आघात केँ कोना सहत? रिभिन्न प्रकारक ताम-नाय हाङ महग रारस्थाक निरहित रँहूत कष्टकारी होगत छैक। किन्तु घंटाक शोभा रँहँ राँ जेन रा रिराह समारोह केँ कथित कप सँ' अरिम्बसनीय रँनारँए केव दरारँ सँ' नोग हजारो नाथो कपेया पानिमे रँहा दैत अछि। नरँ पीठ ीक सुशिक्षित लोक केँ रँमरौक चाली जे रिराहकेँ अरिम्बवर्णीय रँनारँेत छैक दू पविर्वावक आपसी म्बत आ' सञ्चरु। रिराहकेँ अरिम्बवर्णीय रँनारँेत छैक ओकव सहनता जाहि जेन मात्र निष्ठा आ' रिश्वसक प्रचुवता चाली, ठेँठ हाँस भोज रारस्था रा महग कपडू। नत्रा आव गहना जेरव नथि। अ सब प्रथिम साधनक माँ'ग मध्यम रर्गीय पविर्वावक जेन सीमित बहय तखने कन्या अछि।

अपरार्य सँ' रँचि कव यदि नरहगक रव कग्या अपन सूम रँम सँ' गविमामय सञ्चरुक शुकथात कवथि तव अ सबक हितमे होयत। कग्यापम्ब पव रवपम्ब द्वावा रौवातीक भव स्नागतक दरारँ देखि रँहँ। दूथ होगत अछि। स्नागत तव हृदय सँ' हृथक चाली कपेया पैसा सँ' नहि। एकठा गवीरँ पविर्वावक राथा सरदेनशीन रयजिकेँ आर्डरवक प्रति आव कठोव रँनारँए जेन पर्याप्त अछि।

एक करिक करिताक किछु पंक्ति उल्लिखित अछि :

"कोना कक रँवियाती जी अहाँ'क सकोव यो ।

धानो नहि जेन हमवा वरियो के नथि आस यो ॥

कठिन समय छैक सुनियउ भारी पविर्वाव यो ।

कथ सुथ जे जेठए कव नियउ स्नाकाव यो ॥



सञ्ज्ञ रँनारँ एनहँ अहँ वाखु हमरो नाज यो ।

घब द्दारो धूँठन ह्णँठन दनान पब नहि खाँट यो ॥

दिन वाति पेँठ भवय नय कबि कः रोजगाव यो ।

खानपियनि दः नहि सकनहँ छी रँहूँत नाचाव यो ॥ ”

आँडु हम सरँ अहि आँडरँवक समून नाशि कः मिथिनाक गविमा रँहूँ री ।

१०. संगीत शिक्षा-गजेन्द्र ठाकुर



श्री बामश्रिय सा 'बामवर्ग'

भावतीय शास्त्रीय संगीतक समर्पित आँ रिनम्कण ७२ रिखात संगीतज्ञ पँ बामश्रिय सा 'बामवर्ग' केव जन्म ११ अगस्त १९२५ ग. तदनुसावभाद प्रष्टपम्क एकादशी तिथिकेँ मधुँरनी जिनाभुञ्जात खजूवा नामक गाममे भेनहि । हिनकव पितक नाम पँ सुखदेर सा आँ काकाक नाम पँ मधुँसदन सा छन्हि । बामश्रियजीक संगीत शिक्षा हिनका दूनु गोठेँसँ तावमोनियम आँ गायनक रूपमे मात्र ३. ररँक आँहमे शुक भए गेनहि । तकवा रँद श्री अरध पाँठकजीसँ गायनक शिक्षा भेँठनहि ।

१३. ररँ धवि रँनावसक एकठाँ प्रसिम्क नाँठक कम्पनीमे बामश्रिय सा जी कम्पाजवक रूपमे कार्य कएनहि । पँ भोनानाथ भँष्ट जी सँ २३. ररँ धवि धुरपद, धमाव, खयान, ठुँमवी, दादवा, ठुँप्पा शीनी सभक रिधिरत शिक्षा नेनहि ।

पँ भँष्ट जीक अतिविकृत बामश्रिय सा जी पँ री.एन. ठकाव (प्रयाग), उँसुताद हरँरँ खाँ (किवाना), पँ री.एस. पाँठक (प्रयाग) सँ सेहो संगीतक शिक्षा प्राप्त कएनहि ।

पँ सा १९३४ सँ प्रयागमे स्वाँग कपसँ बहि बहन छथि । १९३३. ग.मे हिनकव निहकित्त नूकवर्गज संगीत रिद्यालयमे संगीत अध्यापक रूपमे भेनहि । १९७० ग.मे हिनकव निहकित्त प्रयाग संगीत समितिमे भेनहि, जतए १९१० धवि प्रभाकव आँ संगीत प्ररीण कम्काक शिक्षक बहनाह । १९१०मे गनाहारँद रिधिरिद्यालयक संगीत रिभागाध्यक्ष श्री प्रा. उँदयशँकव कोचकजी पँ साक संगीत स्केत्रक सेराँसँ प्रभारित भए रिधिरिद्यालयमे हिनकव निहकित्त कएनहि । पँ सा उँकेँष्ठ, शिक्षक, गायक आँ आकाशिराँगीक प्रथम श्रेणीक कनाकाव छथि । हिनकव अनेक शिष्य-शिष्या आकाशिराँगीक प्रथम श्रेणीक कनाकाव आँ उँतम शिक्षक छथि, जेना-



डॉ. गीता रैनजी, श्रीमति कमला रौस, श्रीमति शुभा द्दुन, श्रीकांत रैथ, श्री शान्ता बाय कशनकव, श्री शान्ता बाय कशनकव, श्री कामता खन्ना, श्रीमति सला दास, डॉ. कपानी बानी सा, डॉ. गना मानरीय, श्री खनिन रुमाव शर्मा, श्री वामशंकव सिंह, श्रीमति संगीता सखना, श्री बाजन पर्विकव, श्रीमति बचना उपाध्याय, श्री नवसिंह भट्ट, श्री भूपेन्द्र शुकना, श्री जगद्विजय गवादि ।

प सा संगीत शास्त्र केव श्रेष्ठ लेखक छथि आर हिनकव निखन खनिनर गीताजनि केव पाछु भाग प्रकाशित भए चुकन छथि, जाहिमे २००१ ई. उपाव बागक र्याख्या छथि आर दू हजावक आसपास रँदिशे छथि ।

मिथिनारानी श्री वामवंग बाग तीवन्तकित्त, बाग रैदेही डेवर, आर बाग रिद्यापति कन्याण केव बचना सेहो कएने छथि आर मैथिली भाषामे हिनकव ख्यान 'वजयति गति बागः' केव खन्कप छथि ।

१९५२ मे उतुव श्रदेशे संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कारक संगे 'बने सदस्यता' सेहो देन गेनहि । संगीत लेखनक हेतु काका हाथवसी पुरस्कार, आर भावतक सर्रोचि संगीत संस्था आ.ग.टी.सी. केव सम्मान सेहो हिनक भेटि चुकन छथि । २००३ ई. मे सुव साधना बने अरार्ड, २००३. मे संगीत नाटक अकादेमीक बाह्यीय पुरस्कार, भावत संगीत बने, बाग श्रुषि, सत तुनसीदास सम्मान, प्रायाग गौवर एर सोपरी अकादेमीक 'सा म प रितन्ता' गवादि सम्मान श्री सार्के प्राप्त छथि । श्री वामवंग जी प्रयागमे 'राबिन दास संगीत पविषद' केव स्थापना कए अनेकालेक संगीत समारोहक आयोजन सेहो कएने छथि । 'गनाहारोद रिश्वरिद्यालय संगीत सम्मनन' ३० रररसँ रँद पडन डन जकवा रारररि कपसँ १९५० मे पुनः श्री सा आवसु कवरँउनहि । किएक तँ श्री सा नग कोनो उपाचाविक डिग्री नहि छनहि, गनाहारोद रिश्वरिद्यालय अपन नियममे पविररुतन कएनेक आर हिनका ओतए संगीत रिभागाध्याक्क रँनाउन गेनहि, जतएसँ ओ १९५९ ई. मे सेरानिरुतु भेनाह । तुनसीक मानसक आधाव पव श्री सा सात काल्दक संगीत बायाशक सेहो बचना कएनेछि । प सा द्दुख कपसँ ख्यान, रूमवी, दादवा, ठप्पा आर संगहि डुरपद, धमाव, तबाना, तिवरठ, चतुर्वंग, बागमाना, बागसागव, बागतान सागव, भजन आर लोकगीत गायनमे सिक्क छथि ।

अखन ५० रररक आयामे प्रयागमे श्री सा संगीत साधनामे बत छथि ।

११. रौनारुा प्रते-गजेन्द्र ठाकुर

रौनारुा प्रते

-गजेन्द्र ठाकुर



## गोनू सा आ दस ठोप



रौरा

चित्र ज्याति सा चौधरी

मिथिना बाज्यमे भयकव सुखाइ पड़न । बाजा इ नहो पिठरा देनहि, जे जे का एकव तोइ रताउत  
ओकवा प्रवस्काव भेटत ।

एकठा रिशानकाय रौरा दस ठा ठोप कएने बाजाक दवरौवमे ग्रा कहत अएनाह जे ओइ सय ररष  
हिमानयमे तपस्या कएने छथि आइ यत्तसँ ररष कवाइ सकैत छथि । साँममे हुनका स्थान आइ सामग्री  
भेटि गेनहि । गोनू सा कतहू पहूनाग कवरौक नेन गेन बहथि । जखन साँममे घूबनाह तखन  
कनिअणक झँसँ सबठा गप सुनि आश्चर्यचकित हुनका दर्शनार्थ रिदा भेनाह ।

एहव भोव भेनासँ पहिनहि सौँसे सोव भए गेन जे एकठा रौरा ठोप रौरा सेहो पधावि चूकन छथि ।

आरँ दस ठोप रौराक भेटै हुनकासँ भेनहि तँ ओइ कहनहि “अहाँ रौरा ठोप रौरा छी तँ हम श्री श्री १०  
रौरा ठोप रौरा छी । कहू अहाँ कोन रिधिये ररष कवाएरँ” ।

“हम एकठा रौरा बखने छी जकवासँ मेघकेँ खौँचावरँ आइ ररष होएत” ।

“ओतेक ठाँक रौरा बखेत छी कतए” ।

“अहाँ एहन ठोंगी साधूक झूठमे” ।

आरौं ओ२ दस ठोप रौरा शौचक रहला कए रिदा भेना ।

“ओ२ । अपन खवाम आ२ कमलन तँ नए जाडुं” । झूदा ओ२ तँ भागन आ२ लोक सब पछोड़ कए ओकब दाढ़ी पकवि घीचए चाहनक । झूदा ओ२ दाढ़ी छन नकनी आ२ ताहि नेन ओ२ लोचा गेन । आ२ ओ२ हँगी मोंका पारिं भागि गेन । तखन गोनू सा सेहो अपन मोछ दाढ़ी हँठी कए अपन कपमे आरि गेनाह । बाजा हनकब चतुर्वताक सम्मान कएनहि ।

रैचा लोकनि द्वारा स्वर्गीय श्लोक

१. प्रातः कान ब्रह्महृष्ट (सूर्योदयक एक घंटा पहिले) सरप्रथम अपन दनु हाथ देखरौक चाली, आ ग्ल श्लोक रैजरौक चाली ।

कवात्रे रसते नम्माः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा श्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नम्मा रैसत छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मूनमे ब्रह्मा स्थित छथि । भोबमे ताहि द्वारा कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या कान दीप जेसरौक कान-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।

दीपात्रे शिर्कवः प्राकृतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मून भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्णु) आ२ दीपक अत्र भागमे शिर्कव स्थित छथि । हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ नमस्काव ।

३. स्वतरीक कान-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं त्रेनतेर्यं बृकोदवम् ।

शयने यः अवेरिन्निं दूः स्वप्नस्तु नश्रति ॥

जे सब दिन स्वतराँसँ पहिले वाम, क्रमावस्त्रामी, हनुमान्, गबरु आ२ भीमक स्वरण करैत छथि, हनकब दूः स्वप्न नश्रुं भ२ जागत छहि ।

४. नहरौक समय-





गङ्गी च यद्गङ्गे चैर गौदारवि सबल्लति ।

नर्मदे सिङ्घु कारेवि जनेह्मिन् सल्लिधिं क्वक ॥

हे गंगा, यद्गङ्गा, गौदारवी, सबल्लती, नर्मदा, सिङ्घु आः कारेवी धाव । एहि जनमे अपन साल्लिध्या दिख ।

३. उतुव यसेद्गङ्गा हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्ष तत् भावतं नाम भावती यत्र सल्लतिः ॥

सद्गङ्गाक उतुवमे आः हिमानयक दक्षिणमे भावत अस्ति आः उतुका सल्लति भावती कहलैत छथि ।

७. अहना द्रौपदी सीता तावा मल्दादवी तथा ।

पञ्चकं ना अरेल्लिं महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तावा आः मल्दादवी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक अर्षण करैत छथि, हुनकव सभ पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१. अश्विथोमा र्निर्यासो हनुमांश्च रिभीषणः ।

द्वपः पवश्वामश्च सल्लते चिबङ्गीरिनः ॥

अश्विथोमा, र्निर, र्यास, हनुमान्, रिभीषण, द्वपाचार्य आः पवश्वाम- ङा सात ठी चिबङ्गीरी कहलैत छथि ।

+ साते भरतु अश्वीता देरी शिखर रासिनी

उहनेन तपसा नङ्गा यया पशुपतिः पतिः ।

सिङ्घिः साश्च सतामस्तु प्रसादान्तुश्च धूर्जटेः

जान्नीरिहनेनेथेर यगुधि शशिनः कना ॥

६. रौनोऽहं जगदानन्द न मे रौना सबल्लती ।

अपूर्णे पचमे रर्षे र्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१२. पङ्गी श्रद्ध-गजेन्द्र ठाकुर

पङ्गी श्रद्ध



पंजी-संग्राहक- श्री रिद्यानंद मा पञ्जीकाव (प्रसिद्ध मोहनजी)

श्री रिद्यानन्द मा पञ्जीकाव (प्रसिद्ध मोहनजी) जन्म-09.04.1957, पद्मूखा, ततेन, ककरौड(मधुर्नी), वशीहय(पूर्विया), शिरनगव (खवविया) आ सम्प्रति पूर्विया। पिता नङ्ग धोत पञ्जीशास्त्र मार्तुन्द पञ्जीकाव मोदानन्द मा, शिरनगव, खवविया, पूर्विया। पितामह-स्र. श्री भिथिया मा । पञ्जीशास्त्रक दस र्ष धवि 1970 ज.सँ 1979 ज. धवि अध्यायन, 32 र्षक रयससँ पञ्जी-प्ररधक सररुन आ' सबरुणामे सनन। प्रति- पञ्जी शाखा पुस्तकक निपातवण आ' सररुन- 800 पुगसँ अधिक रकन सहित। पञ्जी नगवमिक निपातवण 3 सररुन- नगलग 600 पुगसँ उपव(तिवहता निपिसँ देरनागवी निपिमे)। रक- पञ्जीकाव मोदानन्द मा। रकक रक- पञ्जीकाव भिथिया मा, पञ्जीकाव निवसू मा प्रसिद्ध रिधुनाथ मा- सौवार्ठ, पञ्जीकाव नूठन मा, सौवार्ठ। रकक शास्त्रार्थ परीरुका- दवभंगा महाबाज रुमाव जीरेरुव सिहक यत्रापरीत सरुकावक ररसव पव महाबाजाधिवाज(दवभंगा) कामेरुव सिह द्वावा आयोजित परीरुका-1937 ज. जाहिमे मोथिक परीरुकाक रुथा परीरुकाक म.म. डाँ. सब रगानाथ मा उनाह।

रैराहिक अधिकाव निर्णय

नियम १. कोनो कया अपन १७ पुरवा (पितरुन आ' मातरुन मिनारुके) सँ उठम स्थानमे बहत उथि-जिनका उठि कहन जागत उरुि।

एहि उठिक निर्धरुण निम्न रकावसँ होगत उरुि।

१.कयाक अपितामहक पितामह प्रथम उठि

२.कयाक अपितामहक मातामह द्वितीय उठि

३.कयाक पितामहक मातामह तृतीय उठि

४.कयाक अपितामहक मातामह चतुर्थ उठि

५.कयाक पितामहक अपितामह पञ्चम उठि

७.कयाक पिताक मातामहक मातामह उठम उठि



- १.कन्याक पितामहीक प्रमातामह सातम छठि
- ४.कन्याक पितामहीक मातृमातामह आठम छठि
- ६.कन्याक मातामहक प्रपितामह नरम छठि
- १०.कन्याक प्रमातामहक मातामह दसम छठि
- ११.कन्याक मातामहक प्रमातामह एगावहम छठि
- १२.कन्याक मातामहीक मातृमातामह बावहम छठि
१३. कन्याक मातामहीक प्रपितामह तेवहम छठि
- १४.कन्याक मातामहीक पितृ मातामह चौदहम छठि
- १५.कन्याक मातामहीक प्रमातामह पन्द्रहम छठि
- १६.कन्याक मातामहीक मातृ मातामह सोनहम छठि

उपरोकित समस्त छठिक समान महत्त्व अछि । एहिमे सँ कोनो छठि रवक पितृ पक्षमे अथवा पव उक्त रव कन्याक मध्य त्रैराहिक अधिकार नहि होएत । ७२ छठि यदि रवक मातृरुतमे अछि तँ अधिकार होएत ।

नियम२. रव कन्याक गौत्र एक नहि होए ।

नियम ३. रव कन्याक प्ररव एक नहि होए ।

नियम ४. रवक मातामह ७२ कन्याक मून ७२ मूनग्राम सहित एक होए तँ सात पुस्त धरि मातृ सापिण्डिक कावर्षे अधिकार नहि होएत ।

नियम३.रवक रिमाताक भायक सन्तान कन्या नहि होए ।

मातृतः पञ्चमी एकतरा पितृतः सप्तमी भजेत्- मन्वसृति

असपिण्डाय या मातृतः असपिण्डा च या पितृतः सा प्रशस्ता द्विजातीनां दाव कर्मणि मेथुने ।

पञ्चमात् सप्तमात् सप्तमात् उर्ध्वं मातृतः पितृतस्त ।

सपिन्दा निरर्तेत कर्तुम् रातितिसम् ।

(खन्नरर्तेते)

१३. संस्कृत मिथिना -गजेन्द्र ठाकुर



चाणक्य...कौटिल्य

चाणक्य भावतकेँ एकठ्ठा सुदृढ आँ केन्द्रीकृत शोसन प्रदान कएनन्हि, जकब खन्नभर भावतरासीकेँ पूर्रमे नहि छनन्हि ।

चाणक्यक जीरन आँ रशि रिषयक सूचना अश्रामाणिक अछि । चाणक्यक आन नाम सभ सेहो अछि । जेना कौटिल्य, रिष्णुगुप्त, रातःसायन, मानांग, द्रामिन, पाष्किन, श्लामी आँ आँगन । रिष्णुगुप्त नाम कामंदक केब नीतिसाव, रिशाखादशक द्वादवाष्कस आँ दंडीक दशकमावचवितमे भेटैत अछि । अर्थशास्त्रक समापनमे सेहो अ चर्च अछि जे नन्द राजासँ भूमिकेँ उफ्फाव केनिहाव रिष्णुगुप्त द्वारा अर्थशास्त्रक बचना भेल । अर्थशास्त्रक सभठाँ अध्यायक समापनमे एकब बचयिताक रूपमे कौटिल्यक रर्षि अछि । जेन भिष्णु हेमचन्द्र हिनका चाणक्यक पुत्र कहैत छथि । अर्थशास्त्रमे उल्लिखित अछि जे कौटिल्य कर्षान गौत्रमे उपेन्न भेनाह ।

पन्द्रहम अधिकरणमे कौटिल्य अपनाकेँ ब्रौह्मण कहैत छथि । कौटिल्य गौत्रक नाम, रिष्णुगुप्त राजिगत नाम आँ चाणक्य रशिगत नाम रूमना जागत अछि ।

धर्म आँ रिषिक स्केत्रमे कौटिल्यक अर्थशास्त्र आँ याङ्गरक्य सूत्रिमे ररुत समानत अछि जे चाणक्यक मिथिनारासी होयराँक श्रमाँ अछि ।

अर्थशास्त्रमे(१.७ रिनयाधिकारिके अश्रमाधिकरणे षडोःध्यायः अन्दिद्यजये अविषड्रश्नाः) कवान जनक केब पतनक सेहो चर्चा अछि ।

तद्विक्रूरुतिवररुन्दिद्यशचातुवन्नाःपि राजा सद्या रिनश्रुति- यथा

दाण्डक्या नाम भोजः कामाद् ब्रौह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सररुवाःश्रुता रिननाशि कवानश्च र्रैदेहः .... ।



अथशिक्षाक्रमे १३. ठा अधिकवण अछि । सभ अधिकवण केव रिभाजन प्रकवणमे भेन अछि ।

कौटिल्यक राज्य सङ्गी रिचाव सपुंग सिङ्गातमे अछि । स्वामी, अमाव, वाहृष्ट, दूआ, कोष, दंड आइ मित्र केव कपमे राज्यक सातठा अंग अछि । कङ्कितन्यक संपुता सिङ्गातमे राज्यक प्राशिसनिक रिभा रा तीर्थक चर्च अछि- ङ १+ ठ अछि ।

१. मतीं, पुरोहित२. सेनापति४. हरवाज३. दोराविक७. अतरीशिक१. प्रशिक्षा+ सतता९. सन्निधात्रा१०. प्रदेष्टा११. नअयक१२. पौव र्यारहाविक१३. कर्मातिक१४. मत्रिपविषदाध्याम्क१३... दंडपान१७. दूआपान११. अतपानि१+ आद्विक ।

रिधिक चविठा त्रीत अछि- धर्म, र्यारहाव, चवित्र आइ वाजशोसन ।

कौटिल्यक अतववाज्य संरंध केव सिङ्गात मडन सिङ्गात केव नामसँ प्रतिपादित अछि । रिजिगीश वाजा- रिजय केव गच्छा रना वाजा- केव चाक कात अविप्रप्रति वाजा आइ अविप्रप्रति वाजाक सीमा पव निम्न प्रप्रति वाजा बहत छथि । रिजुगीश वाजाक सोमाँ मित्र, अविमित्र, मित्र-मित्र आइ अविमित्र-मित्र बहत छथि आइ पाडाँ पाङ्कित्वाहाहलीठक शत्रु), आर्द (पीठक मित्र), पाङ्कित्वाहासाव (हाङ्कित्वाहाक मित्र) आइ आर्दसाव (आर्दक मित्र) बहत छथि ।

रिजिगीशक साङ्गु सिङ्गात अछि, सधि, रिग्रह, यान, आसन, सश्रिय आइ द्विधीभार । कङ्कितन्यक अथशिक्षाक्रमक प्रथम अधिकवणक पन्द्रहम अध्यायमे दूत आइ गुप्तचव र्यारहाक रणन अछि ।

भावतीय शिनाजेथसँ पता चलेत अछि जे चन्द्रगुप्त मौर्य ३२१ ङ.पू. मे आइ अशोकरर्हन २७७ ङ.पू. मे वाजा रननाह । तदनुसाव अथशिक्षाक्रमक वचना ३२१ ङ.पू आइ २७७ ङ.पू. केव रीच भेन सिङ्ग होगत अछि ।

### १४. मैथिली भाषापक

मैथिली कोष प्राजेकठकेँ आगू रँड ङ, अपन स्वमार आइ योगदान ङ-मेन द्वावा [ggajendra@yahoo.co.in](mailto:ggajendra@yahoo.co.in) रा [ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) पव पठाङ ।

### १३. वचना लेखन-गजेन्द्र ठाकुर

अ आ करआ ह (असंयुक्त) आइ रिमर्जनीय केव उचावण कर्णमे होगत अछि ।

ग ङ चरआ य श केव उचावण तान्त्रमे होगत अछि ।

अ ऋ ठरआ व ष केव उचावण मूर्धामे होगत अछि ।

नू तरआ न स केव उचावण दाँतसँ होगत अछि ।



उ ङ परञ्च आ२ उपधानीय केव उँचावण ओग्रसँ होगत अछि ।

र केव उँचावण उपवका दाँतसँ अथव ओग्र केव सहायतासँ होगत अछि ।

ए ँ केव उँचावण कर्ण आ२ तारुसँ होगत अछि ।

ओ ँ केव उँचावण कर्ण आ२ ओग्रसँ होगत अछि ।

य व न र अन्त राङ्गन जेकाँ उँचावणमे जिह्वाक अग्रदि भाग तान्नादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नहि करैत अछि । श् ष् स् ह जेकाँ एहिमे तान्ना आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नहि होगत अछि ।

क सँ म धवि स्पर्श(रो स्फाँक कावण जिह्वाक अग्र द्वावा राह्य श्रवाह बोकि कए छोटहन जागत अछि) रर्ण व सँ र अन्तःसु आ२ ष सँ ह घर्षक रर्ण भेन ।

सभ रञ्जक पाँचम रर्ण अन्वनासिक कहलैत अछि कावण आन स्थान समान बहितो एकव सभक नासिकामे सेहो उँचावण होगत अछि- उँचावणमे राह्य नासिका आ२ झूँह राँठे रँहाव होगत अछि ।

अन्वस्त्राव आ२ यम केव उँचावण मात्र नासिकामे होगत अछि- आ२ ङ सभ नासिक्य कहलैत अछि- कावण एहि सभमे झूँहद्वार रँन्द बहैत अछि आ२ नासिकासँ राह्य रँहाव होगत अछि । अन्वस्त्रावक स्थान पव न् रा म् केव उँचावण नहि होयराँक चाही ।

(अन्वरतते)

मैथिलीक मानक लेखन-शैली

1. जे शैक्ष मैथिली-साहित्यक प्राचीन कानसँ आग धवि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे निखन जाय- उँदाहरणार्थ-

श्राह

अश्राह

एखन

अखन, अखनि, एखेन, अखनी

ठाँम

ठिँमा, ठिँना, ठिँमा

जकव, तकव

जेकव, तेकव

तनिकव

तिनकव । (रैकल्पिक कर्षेँ श्राह)

अछि

ईछ, अहि, ए ।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्ष रैकल्पिकतया अर्पनाउन जाय:

भ गेन, भय गेन रा भए गेन ।

जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाए बहन अछि ।

कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कवए गेनाह ।



3. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत छति यथा कहननि रा कहनहि ।
4. 'ए' तथा 'उ' ततय निखन जाय जत स्पष्टतः 'अग' तथा 'अङ' सदृश उच्चारण गण्ट, हो ।  
यथा- देखेत, डलेक, रौंथा, डोक गवादि ।
5. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध एहि कपे प्रयुक्त होयतः  
जेह,सह,अह,उह,जेह तथा देह ।
6. ह्रस्व अकारांत शिद्धमे 'अ' के वृत्त कवरँ सामान्यतः अत्राह थिक । यथा- अत्राह देखि अरह,  
मानिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।
7. स्मृतत्र द्रस्य 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक  
प्रयोगमे रैकल्पिक कपे 'ए' रा 'य' निखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह,  
जाय रा जाए गवादि ।
8. उच्चारणमे दू स्वरक रीच जे 'य' ध्वनि स्मृतः अरि जागत छति तकरा नेथमे स्थान रैकल्पिक  
कपे देन जाय । यथा- धीथा, अहँथा, रिथाह, रा धीया, अहँया, रियाह ।
9. सावनासिक स्मृतत्र स्वरक स्थान यथासंभर 'अ' निखन जाय रा सावनासिक स्वर । यथा:- मैअण,  
कनिअण, किवतनिअण रा मैअँ, कनिअँ, किवतनिअँ ।
10. कावकक रिभक्तिउक निम्नलिखित कप अत्राह:-  
हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे ।  
'मे' मे अन्वस्वाव सरथी लज्ज थिक । 'क' क रैकल्पिक कप 'केव' बाखन जा सकैत छति ।
11. पूरकानिक द्वियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अत्राय रैकल्पिक कपे नगाउन जा सकैत छति ।  
यथा:- देखि कय रा देखि कए ।
12. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि निखन जाय ।
13. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'य' क रँदना अन्वसाव नहि निखन जाय(अपरदाद-संसाव संसाव नहि), किंतु डापाक  
स्वरिधार्य अर्द्ध 'उ' , 'अ', तथा 'ण' क रँदना अन्वस्वारो निखन जा सकैत छति । यथा:- अर्द्ध, रा  
अर्क, अरहन रा अरन, कर्ठ रा कँठ ।
14. हनंत चिह्न नियमतः नगाउन जाय, किंतु रिभजिक संग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:-  
श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।
15. सभ एकन कावक चिह्न शिद्धमे सँठा क निखन जाय, हँठा क नहि, सहाज रिभजिक हेतु ह्रवाक  
निखन जाय, यथा घव पवक ।



16. खनुनासिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वावा र्राज कयन जाय । पर्वतु ऋद्रुणक सुवरिधार्थ हि समान जट्टिन मात्रा पव खनुसुवावक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत खड्डि । यथा- हिँ केव रँदना हि ।
17. पूर्ण रिवाय पासीसँ ( । ) सूचित कयन जाय ।
18. समस्त पद सठ्ठा क निखन जाय, रा हागह्लेनसँ जोड्डी क , हठ्ठा क नहि ।
19. निख तथा दिख शिद्धमे रिंकावी (२) नहि नगाउन जाय ।
- 20.

त्राह

त्राह

1. होयरँना/होरँयरँना/होमयरँना/  
होयरँक/होएरँक
2. खा/खा२
3. क नेने/क२ नेने/कॣ नेने/कय नेने/  
न/न२/नय/नॣ
4. भ गेन/भ२ गेन/भय गेन/भॣ गेन
5. कव गेनाह/कव२ गेनाह/कवॣ गेनाह/कवय गेनाह
6. निख/दिख
7. कव रँना/कव२ रँना/ कवय रँना
8. रँना
9. खाँन
10. प्रायः
11. दूः ख
12. चनि गेन  
गेन/चैन गेन
13. देनखिन्ह  
देनखिन

हेरँरँना, हेमरँना

खा

निय,दिय,निख,दिय

कवे रँना/क'व रँना

रना

खाँन

प्रायह

दूख

चन

देनकिन्ह,





14. देखनन्हि देखनैन्हि	देखननि/
15. डखिन्ह/ डनन्हि	डखिन/ डनैन/ डननि
16. चनैत/दैत	चनति/दैति
17. एखनो	एखनो
18. रैठन्हि	रैठन्हि
19. ओ'/ओ२(सरनैम)	ओ
20. ओ (संयोजक)	ओ'/ओ२
21. हणैगि/हणैगि हणैगैग/हणैगैग	
22. जे जे/जे२	
23. ना-बुक्ब	ना-बुक्ब
24. केनन्हि/कएनन्हि/कयनन्हि	
25. तखन तँ	तखनतँ
26. जा' बहन/जाय बहन/जाए बहन	
27. निकनय/निकनए नागन रैहबाय/रैहबाए नागन	निकन/रैहरे नागन
28. ओतय/जतय	जत'/ओत'/जतए/ओतए
29. की हूङ्गन जे जे	कि हूङ्गन
30. जे जे/जे२	
31. कुदि/यादि(मोन पावर)	कुगद/यागद/कुद/याद
32. ओहो/ओहो	
33. हँसए/हँसय	हँस



34. लौ आकि दस/लौ किंरा दस/लौ रा दस

35. सान्-सम्ब  
सम्ब

सास-

36. छह/सात  
छ/छः /सात

37. की

की/की२(दीर्घाकावान्तमे रर्जित)

38. जरौरै  
जरारै

39. कवणताह/कवयताह  
करेताह

40. दनान दिशि  
दिशि

दनान

41. गेनाह  
गणनाह/गयनाह

42. किछ आव  
किछ ँव

43. जागत छन  
छन

जाति छन/जैत

44. पहुँचि/भेष्टि जागत छन  
छन

पहुँच/भेष्ट जागत

45. जरौन(यरा)/जरान(होली)

46. नय/नए क/क२

47. न/न२ कय/कए

48. एखन/अखने  
अखन/अखने



49. खलीकैँ  
खलीकैँ

50. गहीव  
गहीव

51. धाव पाव केनाग

धाव पाव केनाय/केनाए

52. जेकाँ  
जेकाँ/जकाँ

53. तहिना  
तेहिना

54. एकव

खकव

55. रँहिनड

रँहनोग

56. रँहिन

रँहिन

57. रँहिन-रँहनोग  
रँहनड

रँहिन-

58. नहि/ले

59. कवरौं/कवरौय/कवरौए

60. त/त २  
तय/तए

61. भाय

भे

62. भाँय

63. यारत

जारत

64. माय

मे

65. देखि/दएहि/दयहि

दहि/दैहि



## 66. द/द २/द९

किञ्च खाव शिङ्ग

मानक मैथिली\_३

तका कए तकाय तकाए

पैरे (on foot) पएरे

ताहमे ताहमे

पत्राक

रँजा कय/ कए

रँननाय

कोना

दिनुका दिनका

ततहिँ

गवरँउनहिँ गवरँनहिँ

रौब रौबू

चेन्ह चिन्ह(अशुक्र)

जे जे'

से/ के से/के'

एथुनका अथुनका

भूमिहाव भूमिहाव

सुगव सुगव

मठहाक मठहाक

डुरि

कवगयो/ओ करैयो

प्रवावि प्रवाग



सगड t-साँटी सगड t-साँटी

पएरे-पएरे पेंरे-पेंरे

खेनएरौक खेनेरौक

खेनाएरौक

नगा

होए- हो

रूमन रूमन

रूमन (संरौधन अर्थमे)

येह यएह

तातिन

अयनाय- अयनाग

निम- निन्द

रिब रिन

जाए जाग

जाग(*in different sense*)-*last word of sentence*

छत पव आरि जाग

ने

खेनाए (*pl ay*) -खेनाग

शिकागत- शिकायत

ठप- ढप

पढ- पठ

कनिए/ कनिये कनिणै

बाकस- बाकशे

होए/ होय होग

अँवदा- अँवदा



बुंमेनहि (*different meaning- got understand*)

बुंमएनहि/ बुंमयनहि (*understood himself*)

चनि- चन

खधाग- खधाय

मोन पाइनथिह मोन पावनथिह

कैक- कएक- कगएक

नग न'ग

जबेनाग

जबउनाग- जबएनाग/जबयनाग

होगत

गइरेंनहि/ गइरेंउनहि

चिथेत- (*to test*) चिखगत

कवगयो(*willing to do*) करैयो

जेकवा- जकवा

तकवा- तेकवा

रिंदेसब स्थानेमे/ रिंदेसबे स्थानेमे

कवरयनहुँ/ कवरएनहुँ/कवरेंनहुँ

हाबिक (उचावषा हागबक)

उजन रजन

आधे भाग/ आध-भागै

पिचा/ पिचाय/पिचाए

नए/ ने

रैचा नए (ने) पिचा जाय

तखन ने (नए) कहैत अछि ।

कतेक गौटे/ कताक गौटे



कमाङ्ग- धमाङ्ग कमाङ्ग- धमाङ्ग

नग नग

खेनाङ्ग (for playi ng)

डुथिह डुथिन

होगत होग

का कियो

केशे (hai r)

केस (court -case)

रैननाङ्ग/ रैननाय/ रैननाए

जबेनाङ्ग

कवसी कसी

चबचा चर्चा

कर्म कवम

डुरौरैया/ डुमारैया

एखुनका/ अखुनका

नय (राक्यक अतिम शिद्ध)- न

कएनक केनक

गवमी गर्मी

रबदी रदी

सुना गेनाह सुना/सुनाह

एनाङ्ग-गेनाङ्ग

तेनाने घेबनहि

नए

डरो डरो

कतह- कही



उमविगव- उमवगव

भविगव

धोन/धोखन धोएन

गप/गप्प

के के

दवरँज्जा/ दवरँजा

ठाय

धवि तक

घुवि नौटि

थोवरँक

रँड

तौ/ तू

तौहि( पद्यमे हाह)

तौही/तौहि

कवरँगए कवरँगये

एकेठा

कवितथि कवतथि

पँटि पँट

वाखनहि वखनहि

नगनहि नागनहि

सुनि (उँचावण सुगन)

खडि (उँचावण खगड)

एनथि गेनथि

रितउने रितेने

कवरँउनहि/ करेनथिह





कवणह्नि

थाकि कि

पहुँचि पहुँच

जबाय/ जबाय जबा' (थागि नगा)

से से

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे लष्ठा कए)

खैन खैन

खगन(spacious) खैन

होयतहि/ होयतहि हेतहि

हाथ मटिआयर/ हाथ मटियारैय

खेका खेका

देखाए देखा

देखाय देखा

सउवि सउव

साहेरँ साहेरँ

१७. VI DEHA FOR NON RESI DENT MAI THI LS

VI DEHA M THI LA TI RBHUKTI TI RHUT---

the pre-Kushana period, c. 120 B.C.-A.D. 80, the period of Kushana domination in Bihar, A.D. 50-140, the post-Kushana period, A.D. 140-319.

In second-century B.c. Vaisali forts were constructed e.g. Lauriya-Nandangarh fort of Katragarh, Muzaffarpur in Sunga period. Garb area of Basarh, baked brick defence wall was built at the Garb. In the Sunga period the Abhiscka-Pushkarni at modern Kharauana, was surrounded by a wall. Terracotta unassociated with the Northern Black Polished Ware of the Sungas only Gupta period exceeds the number of seals, sealings and tokens.



**M g r a t i o n o f L i c h e h h a v i S u p u s h p a o f P u s h p a p u r a P a t a l i p u t r a t o N e p a l –(N e p a l I n s c r i p t i o n .**

**P a t a l i p u t r a K i n g ' s S u r r e n d e r t o K a n i s h k a o f t h e B u d d h a ' s A l m s B o w l – C h i n e s e T r a d i t i o n .**

Chinese tradition –he demanded a large indemnity 9,00,000 pieces of gold, but agreed to accept Ashvaghosha, the Buddhist poet and dramatist , Buddha's alms bowl ,compassionate cock–aken away by Kanishka to Purushapura corroborated from a Sanskrit work of Kumaralata –Kalpanmanditika. sovereign ruler of Pataliputra and Vaisali was one and the same, the masters of the Pataliputra–Vaisali region on the eve of the Kushana conquest were the Lichchhavis.

The masters of Vaisali and Videha now controlled the other side of the Ganges as well .

No tradition favours Kusharia control over Vidcha, nor any coins have been found and continued to be ruled by Lichchhavis.Huen Tsiang came to North Bihar in A. D. 637 and visited Vaisali, Svetapura and –the Vriji Country–Madhubani –Janakpur Area. His mention of Vriji as a sub–province of North Bihar– Tirabhukti–migration of the Vrijis to the Madhubani –Janakpur area duringg the period of the Kushana occupation of Vaisali (AD. 80–140). The script current in the region of Videha, which was one of the madhrama janapadas of Jambudvipa in the opinion of the Lalitavistara was Brahma, one and the very first of the sixtyfour scripts listed in that book .Mthila, the ancient capital of Videha ceased to be the capital when Mahapadma Nanda occupied it. The legend Lichhvi found in the coins of Kumaradevi –Chandragupta throws interesting light on the nature of the government of Vaisali–Videha. Kumaiadevi was the Lichvi princess of Vaisali married to Chandragupta I. The fact that on the reverse of the coins of Chandragupta I the Lichchhavis appears in the plural. Tira and Ttrabhukti stand for the province of Tirabhukti– found on the Basarh seals of the Gupta period. Tirabhukti in its career had three capitals one after the other, Vai sali (AD. 319–550), Svetapura (AD. 550–1097) and Si marana–pattana (AD. 1097–1324). The first two are in the Vai shali Di strict while the last is in the Nepalese Terai . (opp. Ghorasahan Railway Station in East Champaran Di strict of Bihar).

**The bigger province of Tirabhuktia comes at AD. 319.**

(c) २००४ सराधिकार स्वबन्धित । रिदेहमे प्रकाशित सभन्ठा बचना आ' आकारिकरक/आश्रेजी–संस्कृत अन्नरादक सराधिकार बचनकाव आ' संग्रहकतुकि नगमे छन्हि । बचनक अन्नराद आ' पुनः प्रकाशिन किरा



<http://www.videha.co.in/> मानुषीमिह संस्कृतम्

आर्कागिरक ँपयोगक आधिकार किररूक हेतु ggaj endr a@vi deha.co.i n पब संपर्क करु । एहि मागठकेँ प्रीति ना ठाहव, मधुनिका चौधरी आ' बग्मि प्रिया द्वारा डिजागन कएन गेल ।

*सिद्धिबद्ध*